RNI No.: UPBIL/2024/87754 वर्ष-1/अंक-11 10 दिसम्बर 2024 मूल्य 10/-

THE YOUTH IDEAS

युवा सोच को समर्पित पत्रिका

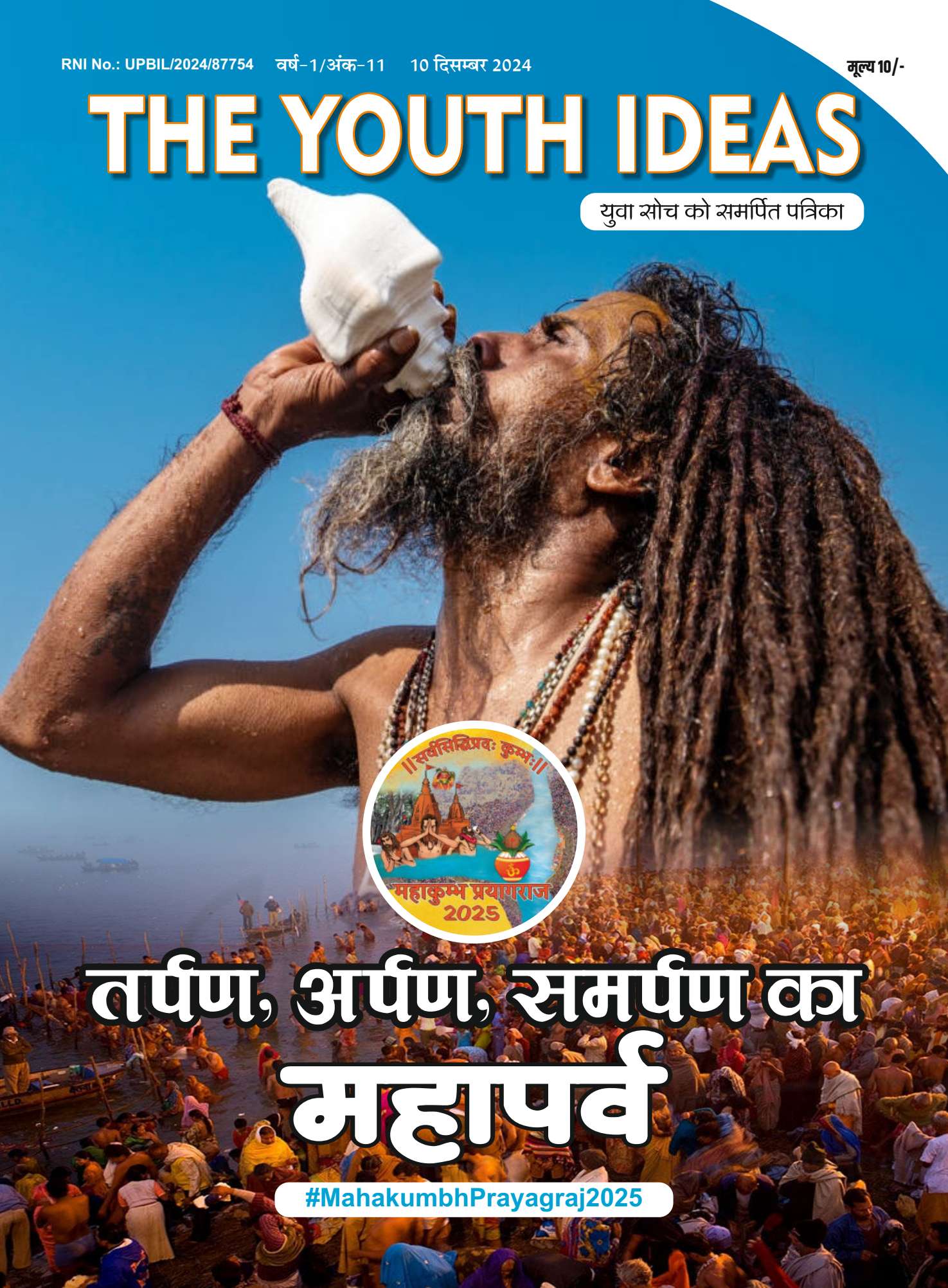

तर्पण, अर्पण, समर्पण का महापर्व

#MahakumbhPrayagraj2025

डिजिटल महाकुम्भ 2025

- ➡ महाकुम्भ की यादगार निशानी का माध्यम बनेगा एआई चौटबॉट
- ➡ क्यूआर स्कैन करिए और पाइए फोटो सहित महाकुम्भ का प्रमाण पत्र
- ➡ सीएम योगी के निर्देश पर देश के कोने कोने में एआई चौटबॉट का किया जा रहा डिजिटल प्रचार
- ➡ एक्स, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर एआई चौटबॉट का ट्रेंड बढ़ा
- ➡ सोशल मीडिया पर मेला के अधिकारी, महाकुम्भ पुलिस व पर्यटन विभाग का एकजुट अभियान
- ➡ महाकुम्भ में एआई जेनरेटिव चौटबॉट की हाईटेक टेक्नोलॉजी के जरिए पहला प्रयोग
- ➡ खाना, लॉकर, वॉशरूम, चेंजिंग रूम जैसी तमाम सुविधाओं के बारे में ए एआई चौट बॉट पर उपलब्ध है जानकारी

आप दुनिया के किसी कोने में हों, महाकुम्भ की यादगार निशानी पुरस्कार के तौर पर पा सकते हैं। यह सुविधा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के डिजिटल महाकुम्भ के विजन के जरिए पूरी दुनिया को मिलने जा रही है। महाकुम्भ में अपनी तरह के पहले अभिनव प्रयोग के रूप में एआई जेनरेटिव चौटबॉट की हाईटेक टेक्नोलॉजी के जरिए किया जा रहा है। इसमें क्यूआर स्कैन करते ही अपनी फोटो सहित महाकुम्भ का प्रमाण पत्र मिलेगा, जिसे प्रिंटेड कॉपी के तौर पर सहेज कर रख भी सकते हैं। सबसे जरूरी बात ये है कि महाकुम्भ के हर इवेंट और हर मेगा प्रोग्राम की पूरी डिटेल इसी एआई चौटबॉट पर मौजूद रहेगी।

मोदी, योगी का सपना हो रहा साकार, विभागों के समन्वय से ले रहा आकार

पीएम के डिजिटल महाकुम्भ के विजन को पूरा करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। प्रयागराज की क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अपराजिता सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर महाकुम्भ को दिव्य, नव्य और भव्य बनाने के लिए युद्धस्तर पर तैयारी की जा रही है। पर्यटन विभाग के साथ साथ मेला के अधिकारी और महाकुम्भनगर की पुलिस मिलकर पीएम मोदी और सीएम योगी के डिजिटल महाकुम्भ के विजन पर आगे बढ़कर काम कर रही है।

तस्वीर युक्त प्रमाण पत्र प्राप्त करने का भी बनेगा माध्यम

ऐसा पहली बार हो रहा है, जब डिजिटलीकरण को इतना ज्यादा फ्लो मिल रहा है। एआई चौट बॉट के जरिए महाकुम्भ की यादगार निशानी देश दुनिया के श्रद्धालुओं को मिलने जा रही है। इसके लिए लिंक (ीजजचेरूध्ध्बींजइवज.ïनउइी.नच.हवअ.पद) पर जाना होगा। या फिर इसका क्यूआर स्कैन करके अपनी फोटो सहित महाकुम्भ का प्रमाण पत्र हासिल कर सकते हैं। सीएम योगी के निर्देश पर देश के कोने कोने में एआई चौट बॉट का प्रचार किया जा रहा है। देश दुनिया में इसके प्रचार प्रसार के लिए सोशल मीडिया के जरिए डिजिटली प्रमोशन किया जा रहा है। साथ ही एक्स, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर एआई चौट बॉट का ट्रेंड अचानक बढ़ गया है।

महाकुम्भ में अपनी तरह का है यह पहला अभिनव प्रयोग

महाकुम्भ में एआई जेनरेटिव चौटबॉट की हाईटेक टेक्नोलॉजी के जरिए इस तरह का पहला प्रयोग किया जा रहा है, जो महाकुंभ के लिए रोमांचित देश–विदेश के श्रद्धालुओं की सुविधा के मद्देनजर बनाया गया है। एआई जेनरेटिव चौटबॉट आपको दुनिया के किसी भी कोने से महाकुम्भ नगर तक सुरक्षित पहुंचाने में सक्षम है। साथ ही खाना, लॉकर, वॉशरूम, चेंजिंग रूम सहित सभी जरूरी जानकारी एआई चौट बॉट पलक झपकते बताएगा।

इन 11 भाषाओं में करेगा आपकी मदद

हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगाली, उर्दू

बोलकर या लिखकर पूछ सकते हैं अपने सवाल

एआई चौटबॉट की विशेषता यह है कि इसमें बोलकर या लिखकर अपने सवाल आप पूछ सकते हैं। साथ ही, जवाब को अपनी भाषा में सुन भी सकते हैं। यह समस्याओं के निराकरण के साथ ही व्यक्तिगत जुड़ाव व अनुभव प्रदान करने का सशक्त माध्यम भी साबित हो रहा है

RNI No.: UPBIL/2024/87754
मूल्य 10/-
वर्ष-1/अंक-11 10 दिसम्बर 2024

द यूथ आईडियाज

बरेली से प्रकाशित हिंदी-अंग्रेजी समाचार पत्रिका

इस अंक में...

15

मुख्यमंत्री के हाथों मिला सम्मान
हुए अभिभूत

09

भारत एशिया का तीसरा
सबसे शक्तिशाली देश बना

28

बंटेंगे तो कटेंगे
योगी के नारे ने
बदला चुनावी परिदृश्य

11

समृद्धि के पथ पर पड़े पग,
महिला सुरक्षा पर
सरकार सजग

30

A Visionary Leader Transforming
Business and Society
Abhinav Agarwal

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक- प्रदीप चंद्र तिवारी द्वारा ज्ञान प्रेस, 105, कालीबाड़ी, बरेली-243001 उत्तर प्रदेश से मुद्रित कराकर एवं 100/बी, फेज-02, अल्मा मातेर विद्यालय के पास, कूर्मांचल नगर, बरेली-243122, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।

संपादक-प्रदीप चंद्र तिवारी
Contact: +91 9115335559
Email: vvoicenetwork@gmail.com

इस पत्रिका में छपे समाचार, रचनाओं/लेख के लिए सम्पादक की जिम्मेदारी रहेगी। समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्र बरेली होगा।

प्रदीप चंद्र तिवारी
संपादक

दिव्य, भव्य और विराट महाकुम्भ

"कुंभ मेला भारतीय संस्कृति, आध्यात्म और आस्था का प्रतीक है, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन कहा जाता है। यह पर्व न केवल भारत की प्राचीन परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं का जीवंत उदाहरण है, बल्कि मानव जीवन में तर्पण, अर्पण और समर्पण के महत्व को भी रेखांकित करता है।"

कुंभ का आध्यात्मिक महत्व

कुंभ मेला चार पवित्र स्थानों/हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिककृमें हर 12 साल के अंतराल पर आयोजित होता है। इसे समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ की कथा से जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि देवताओं और दानवों के बीच हुए समुद्र मंथन में निकले अमृत की कुछ बूंदें इन चार स्थानों पर गिरी थीं। इन स्थानों पर स्नान करने से मानव जीवन के पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

तर्पण : श्रद्धांजलि का प्रतीक

कुंभ मेले में तर्पण का विशेष महत्व है। तर्पण का अर्थ है अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना और उनकी आत्मा की शांति के लिए जल अर्पित करना। यह केवल एक धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि हमारे पूर्वजों के प्रति हमारी श्रद्धा और दायित्व की अभिव्यक्ति है।

अर्पणरू स्वयं को देना

अर्पण का अर्थ है अपनी संपत्ति, समय, और ऊर्जा को ईश्वर और समाज की भलाई के लिए समर्पित करना। कुंभ मेले के दौरान लोग दान, भंडारे, और सेवा कार्यों के माध्यम से अर्पण करते हैं। यह दूसरों की सेवा के माध्यम से स्वयं को जोड़ने का अवसर है।

समर्पण : पूर्ण आत्मसमर्पण

कुंभ मेला समर्पण का पर्व है, जहां व्यक्ति अपने मन, बुद्धि और अहंकार को ईश्वर के चरणों में अर्पित करता है। गंगा, यमुना, और सरस्वती के संगम पर डुबकी लगाकर लोग अपने पापों से मुक्ति की कामना करते हैं और ईश्वर में अपने विश्वास को पुनः स्थापित करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

कुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं हैय यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक महापर्व भी है। देश–विदेश से लाखों लोग इसमें शामिल होते हैं। साधु–संतों के प्रवचन, विभिन्न संस्कृतियों का संगम, और मानवता के लिए समर्पित सेवा कार्य इसे एक अद्वितीय आयोजन बनाते हैं।

कुंभ मेला तर्पण, अर्पण, और समर्पण का ऐसा महापर्व है, जो मानव जीवन को आध्यात्मिकता, कृतज्ञता और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यह पर्व न केवल हमारे धर्म और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है, बल्कि हमें अपने जीवन के उद्देश्य और मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी बोध कराता है।

योगी आदित्यनाथ के नेतत्व में डिजिटल हो रही कुम्भ की तैयारी, विश्वभर में विख्यात होगा 'महाकुम्भ नगर'

दिव्य, भव्य और विराट महाकुम्भ

दिव्य, भव्य और विराट **'महाकुम्भ-२०२५'** का आयोजन होने जा रहा है। विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम इस बार उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित होगा। यह एक विश्व प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जो हर १२ साल में प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में क्रमिक रूप से आयोजित किया जाता है। इसकी जड़ें भारतीय पौराणिक कथाओं और ज्योतिषीय गणनाओं में गहराई तक जुड़ी हुई हैं। महाकुम्भ न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह मानवता, सहिष्णुता और आस्था का प्रतीक है।

उत्तर प्रदेश में कुम्भ मेलों और महाकुम्भ का आयोजन होता आया है, लेकिन जब से उत्तर प्रदेश की बागडोर भारतीय जनता पार्टी के हाथ में आई तब से बहुत सी चीजें बदल गईं। उत्तर प्रदेश में साल 2017 के विधानसभा चुनाव परिणामों में भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड बहुमत मिला। इसके बाद मुख्यमंत्री के रूप में चुने गए श्री गोरक्षपीठ के गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश की बागडोर संभालते ही विकास के साथ ही साथ प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को भी आगे ले जाने का प्लान बनाया।

विकास की मुख्यधारा से जुड़े धार्मिक स्थल

अयोध्या में दीपोत्सव का आयोजन हो या फिर श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, विंध्यधाम हो या फिर नैमिषारण्य। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर धार्मिक स्थल को विकास की मुख्यधारा से जोड़ दिया। अब इसी क्रम में प्रयागराज महाकुम्भ को भी भव्यता प्रदान करने की तैयारी की गई है। प्रयागराज की सड़कों, एयरपोर्ट, रेलवे मार्ग सहित तमाम व्यवस्थाओं को बेहतरीन बना दिया गया है। इस बार 'महाकुम्भ–2025' में देश–दुनिया से 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालु प्रयागराज आने वाले हैं, जो त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाएंगे। आइए जानते हैं हमारे सनातन में क्या है महाकुम्भ का महत्व और क्या है इसका इतिहास।

महाकुम्भ का पौराणिक और ज्योतिषीय आधार

महाकुम्भ का आधार समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, अमृत कलश को पाने के लिए देवताओं और दैत्यों के बीच युद्ध हुआ। इस दौरान अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानोंदृ प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक पर गिरीं। इन स्थानों को पवित्र मानते हुए वहां कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। ज्योतिषीय दृष्टि से, महाकुम्भ का आयोजन तब होता है जब गुरु (बृहस्पति) और सूर्य विशिष्ट राशियों में प्रवेश करते हैं। प्रयागराज में महाकुम्भ तब होता है जब गुरु वृषभ राशि में और सूर्य मकर राशि में होते हैं।

गराज का महाकुम्भ

प्रयागराज, जिसे प्राचीन काल में इलाहाबाद कहा जाता था, गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है। इसे तीर्थराज कहा जाता है और यहां का कुम्भ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह आयोजन धार्मिक क्रियाकलापों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साधु–संतों के दर्शन और विविध गतिविधियों का केंद्र बनता है। महाकुम्भ के दौरान होने वाले शाही स्नान भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का एक अद्भुत संगम होते हैं। ये स्नान प्रमुख तिथियों पर आयोजित किए जाते हैं और इनका गहरा पौराणिक, ज्योतिषीय और आध्यात्मिक महत्व है। शाही स्नानों में साधु–संतों और अखाड़ों की प्रमुख भूमिका होती है। आइए, इसके बारे में विस्तार से जानते हैं३

शाही स्नान का महत्व

शाही स्नान महाकुम्भ का मुख्य आकर्षण होता है। इसे साधु–संतों, अखाड़ों और आम श्रद्धालुओं के लिए पवित्र और विशेष माना जाता है।

शाही स्नान के दौरान:

साधु–संत गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में स्नान करते हैं।

इसे आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के लिए सबसे शुभ अवसर माना जाता है।

यह स्नान एक निश्चित ज्योतिषीय गणना के आधार पर निर्धारित तिथियों पर किया जाता है।

शाही स्नानों की प्रक्रिया

- **अखाड़ों की शोभायात्र:** प्रत्येक शाही स्नान से पहले अखाड़ों के संत और महंत भव्य शोभायात्रा निकालते हैं। इसमें संत–समाज अपने पारंपरिक हथियार, झंडे और भजन–कीर्तन के साथ संगम तट पर पहुंचते हैं।
- **गंगा में प्रवेश का क्रम:** अखाड़ों के बीच शाही स्नान का क्रम पूर्व निर्धारित होता है। प्रमुख अखाड़े पहले स्नान करते हैं, और इसके बाद अन्य अखाड़ों और साधु–संतों की बारी आती है।

- **आम जनता का स्नान**: साधु–संतों के स्नान के बाद आम श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाते हैं। यह प्रक्रिया पूरे दिन चलती रहती है।

'महाकुम्भ–2025' के दौरान इन तिथियों पर शाही स्नान का आयोजन होगा

पौष पूर्णिमा (13 जनवरी 2025): यह पहला स्नान है, जो साधु–संतों और श्रद्धालुओं के लिए महाकुम्भ की शुरुआत का प्रतीक है।

मकर संक्रांति (14 जनवरी 2025): इस दिन सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के अवसर पर शाही स्नान किया जाता है। इसे अत्यंत शुभ माना जाता है।

- **मौनी अमावस्या** (29 जनवरी 2025): महाकुम्भ का सबसे प्रमुख शाही स्नान इस दिन होता है। मौनी अमावस्या को तप और मौन साधना का विशेष महत्व है।
- **वसंत पंचमी** (3 फरवरी 2025): इस दिन गंगा स्नान के साथ वसंत ऋतु का स्वागत किया जाता है।
- **माघी पूर्णिमा** (12 फरवरी 2025): इस दिन का स्नान धार्मिक और ज्योतिषीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- **महाशिवरात्रि** (26 फरवरी 2025): महाकुम्भ का अंतिम शाही स्नान इस दिन होता है। इसे शिव की आराधना का दिन माना जाता है।

शाही स्नान का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

- **धार्मिक एकता**: विभिन्न अखाड़ों और संतों का एक स्थान पर आना भारतीय संस्कृति की विविधता और एकता का प्रतीक है।
- **सांस्कृतिक उत्सव**: शोभायात्रा, भजन–कीर्तन और पारंपरिक अनुष्ठान पूरे आयोजन को एक सांस्कृतिक पर्व का रूप देते हैं।

कुंभ में चौराहों पर लगेंगे प्रतीक चिन्ह

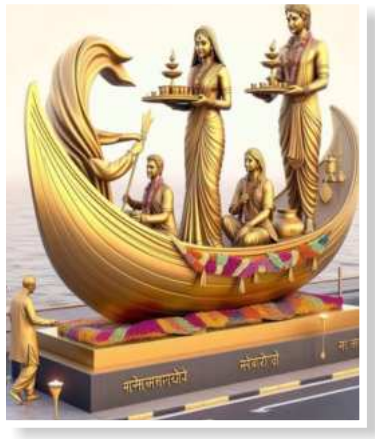

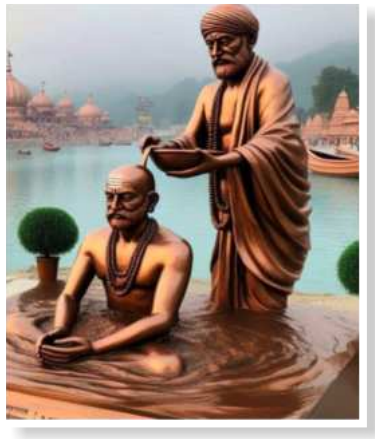

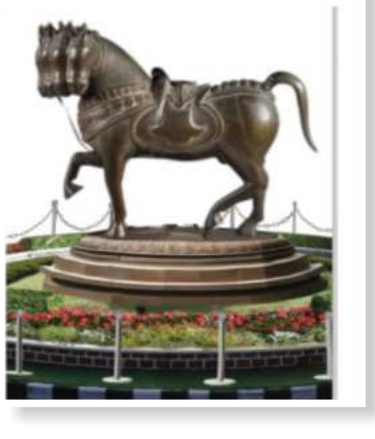

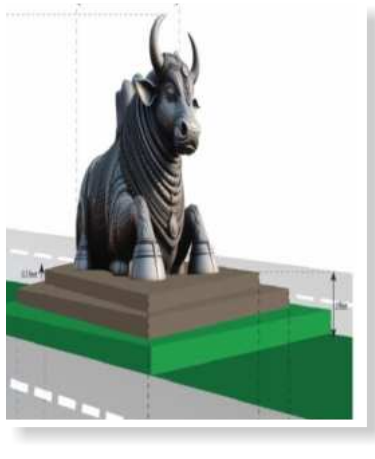

- **आध्यात्मिक अनुभव**: शाही स्नान में भाग लेने वाले श्रद्धालु इसे एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव मानते हैं।

महाकुम्भ का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व

महाकुम्भ न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक विविधता का भी प्रतीक है। यह लाखों श्रद्धालुओं को एकजुट करता है और एक दूसरे की परंपराओं को समझने और स्वीकारने का अवसर प्रदान करता है। महाकुम्भ में भाग लेना न केवल धार्मिक

आस्था को मजबूत करता है, बल्कि एकता और सद्भाव को भी बढ़ावा देता है।

वैश्विक महाकुम्भ और तैयारियां

महाकुम्भ में करोड़ों श्रद्धालु भाग लेते हैं, जिसके लिए व्यापक प्रशासनिक तैयारियां की जाती हैं। अस्थायी शहर, सुरक्षा उपाय, जल और सफाई प्रबंधन, और यातायात व्यवस्था इस आयोजन के अभिन्न अंग हैं। महाकुम्भ का महत्व न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण धार्मिक आयोजन माना जाता है, और इसे न्छम्ैब्ब द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता भी प्राप्त है।

'कुम्भ–2019' से भव्य होगा 'महाकुम्भ–2025'

महाकुम्भ एक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन है, जो मानवता के सर्वोत्तम मूल्यों का प्रतीक है। इसकी भव्यता और पवित्रता इसे दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित आयोजनों में से एक बनाती है। प्रयागराज में 2025 का महाकुम्भ न केवल धार्मिक श्रद्धालुओं बल्कि सांस्कृतिक प्रेमियों के लिए भी एक अनूठा अनुभव होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार 'महाकुम्भ–2025' को विश्वस्तरीय आयोजन बनाने के लिए युद्धस्तर पर तैयारियां कर रही है। इस बार का महाकुम्भ 2019 के कुम्भ से भी अधिक भव्य और दिव्य होने का लक्ष्य है।

महाकुम्भ–2025 के लिए परिवहन और इंफ्रास्ट्रक्चर

'महाकुम्भ–2025' में हिस्सा लेने के लिए देश–दुनिया से लगभग 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आने वाले हैं। ऐसे में भारतीय रेलवे ने 13,000 ट्रेनों के संचालन की व्यवस्था की है, जिसमें 3,000 विशेष ट्रेनें और 10,000 नियमित ट्रेनें शामिल हैं। यह व्यवस्था श्रद्धालुओं की सुगम यात्रा सुनिश्चित करेगी। इसके साथ ही, गंगा नदी पर नया पुल भी बनाया गया है, प्रयागराज–वाराणसी के बीच रेलवे लाइनों की डबलिंग का कार्य पूरा हुआ है, जिससे ट्रेनों के संचालन में सुगमता आएगी। सभी नेशनल और राज्य हाईवे की मरम्मत और सुधार का कार्य पूरा किया जा रहा है।

आवास और सुविधाएं

'महाकुम्भ–2025' के सफल एवं भव्य आयोजन के लिए लाखों श्रद्धालुओं के लिए कई एकड़ क्षेत्र में अस्थाई टेंट सिटी बसाई जाएगी। स्वच्छता के विशेष प्रबंध किए गए हैं। महाकुम्भ–2025 के दौरान 1.5 लाख अस्थाई शौचालय एवं 25 हजार लाइनर बैग युक्त डस्टबिन स्थापित किए जा रहे हैं। साथ ही, 10,000 से अधिक सफाईकर्मियों की तैनाती की जाएगी।

जल, बिजली, स्वास्थ्य सुविधाएं

'महाकुम्भ–2025' के दौरान मेला क्षेत्र और हर वार्ड में स्वच्छ पानी और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। महाकुम्भ क्षेत्र में आधुनिक मेडिकल सुविधाएं, एम्बुलेंस सेवा, और ट्रॉमा सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। श्रद्धालुओं के लिए डिजिटल टूर गाइड्स और ष्द्वादश माधव सर्किट्ष जैसी योजनाएं तैयार की गई हैं। महाकुम्भ में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में विविध सांस्कृतिक प्रदर्शन और भव्य धार्मिक अनुष्ठान भी शामिल होंगे। कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस बल और सीसीटीवी कैमरों की तैनाती की जाएगी। वहीं, ग्रीन महाकुम्भ को बढ़ावा देने के लिए लाखों पौधे लगाए जा रहे हैं और पॉलीथिन पर प्रतिबंध लागू होगा।

डिजिटल महाकुम्भ–2025 के सफल आयोजन की तैयारी

डिजिटल महाकुम्भ के आयोजन के लिए जिले और पूरे मेला क्षेत्र की निगरानी में लगभग 2,700 सीसीटीवी कैमरे, 328 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (।ए) आधारित अत्याधुनिक कैमरे, 24ग7 निगरानी प्रदान करने के लिए डिजिटल खोया पाया केंद्, वेबसाइट और मोबाइल एप्लीकेशन, ।प्ब्।ज ठव्ज्, गूगल मैप इंटीग्रेशन, इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम स्थापित किया जा रहा है। कुम्भ के आयोजन के इतिहास में ऐसा पहली बार होगा जब ।ए का प्रयोग सुरक्षा व्यवस्था के लिए किया जाएगा।

'महाकुंभ–2025' के लिए 'महाकुम्भ नगर' जिला घोषित

'महाकुंभ–2025' के लिए 'महाकुम्भ नगर' जिला घोषित कर दिया गया। यह अस्थायी जिला चार माह के लिए बनाया गया है। एक दिसंबर 2024 से 31 मार्च 2025 तक के लिए बनाया गया महाकुंभ नगर का क्षेत्रफल लगभग 6,000 हेक्टेयर है। इसमें 04 तहसीलों सदर, सोरांव, फूलपुर व करछना के 67 गांवों को शामिल किया गया है। नए जिले में विजय किरन आनंद डीएम और राजेश द्विवेदी एसएसपी हैं। महाकुंभ नगर के जिला कलेक्टर को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 व अन्य सुसंगत धाराओं के अंतर्गत एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, जिलाधिकारी व अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट तथा उक्त संहिता के अधीन संप्रति (इन फोर्स) किसी अन्य कानून के अंतर्गत जिला मजिस्ट्रेट के सभी अधिकार प्राप्त हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को दमदार तरीके से पेश कर रहे हैं। जिसके कारण भारत दुनिया का सिरमौर बनने की दिशा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में तीन देशों की यात्रा की। इस दौरान **G20** समिट में **31** ग्लोबल लीडर्स और वैश्विक संगठनों के प्रमुखों के साथ मुलाकात की। मोदी की विदेश यात्रओं से विश्व में भारत का न सिर्फ सम्मान बढ़ रहा है, बल्कि दुनिया का भारत के प्रति नजरिया भी बदल रहा है।

भारत एशिया का तीसरा सबसे शक्तिशाली देश बना

एशिया पावर इंडेक्स 2024 में भारत को एशिया में तीसरा सबसे बड़ा शक्तिशाली देश बताया गया है। वर्ष 2024 के इस इंडेक्स में भारत ने जापान को पीछे छोड़ा है। इस इंडेक्स में अब केवल अमेरिका एवं चीन ही भारत से आगे है। रूस तो पहले ही इस इंडेक्स में भारत से पीछे हो चुका है। इस प्रकार अब भारत की शक्ति का आभास वैश्विक स्तर पर भी महसूस किया जाने लगा है।

दुनिया का सिरमौर बनने की ओर अग्रसर भारत

भारत का हमेशा से मानना रहा है कि दुनिया के शीर्ष ताकतों को सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए। आर्थिक रूप से संपन्न देशों को छोटे–छोटे देशों के हितों का भी उतना ही ख्याल रखना होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' का मंत्र इस बात की ओर ही संकेत है। भारत में वैश्विक विकास को फिर से पटरी पर लाने, युद्धमुक्त दुनिया बनाने, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य और डिजिटल परिवर्तन जैसे वैश्विक चिंता के प्रमुख मुद्दों पर दुनिया की अगुवाई करने की क्षमता है।

2024 एशिया पावर इंडेक्स भारत को एशिया में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में दर्शाता है। देश का पर्याप्त संसाधन आधार इसे भविष्य में विकास के लिए अपार संभावनाएं प्रदान करता है। भारत के लिए नजरिया आशावादी बना हुआ है। निरंतर आर्थिक विकास और बढ़ते कार्यबल के साथ, भारत आने वाले वर्षों में अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए अच्छी स्थिति में है। विशेष रूप से, भारत का बढ़ता राजनयिक प्रभाव और इसकी रणनीतिक स्वायत्तता इसे हिंद–प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी बनाती है।

व्यंकटेश कुमार
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व सोशल मीडिया एक्सपर्ट हैं)

इस पहलू को अब दुनिया की तमाम बड़ी शक्तियां भी स्वीकार करने लगी हैं। मोदी ने बार–बार कहा है भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम'

की भावना से काम करता है, जिसमें छोटे–छोटे देशों के हितों को पूरा करने के लिए समान विकास और साझा भविष्य का संदेश भी निहित है, जो भारत की आशावादी एवं समतामूलक सोच को दर्शाता है।

दुनिया को राह दिखा रहा नया भारत

जब सारी दुनिया भटकती है, तब भारत उसका मार्ग प्रशस्त करता है। भारत टकराव और संघर्ष को मानवता के लिए खतरा मानता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि मौजूदा दौर में हमें अपने अस्तित्व ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए लड़ने की जरूरत है। भारत ने अपनी विदेश नीति के जरिए हमेशा ही ये संदेश दिया है कि आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, गरीबी, आतंकवाद, युद्ध और महामारी जैसी जिन सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना कर रही है, उनका समाधान आपस में लड़कर नहीं बल्कि मिलकर काम करके ही निकाला जा सकता है।

दुनिया में मची इस उथल–पुथल के बीच ऐसा लगता है कि केवल भारत ही ऐसी प्रमुख शक्ति है, जिसने ऐसा रास्ता चुना जो कूटनीतिक समझ और नैतिकता से भरा है। साथ ही, उसने एक स्थिर अर्थव्यवस्था के वैश्विक ब्रांड के रूप में खुद को स्थापित किया है, जिसके साथ दुनिया व्यापार करना चाहती है। ये सब इसी कारण संभव हुआ, क्योंकि हम अपनी संस्कृति से जुड़े हैं, हमारा नेतृत्व संस्कृति से जुड़ा एक महान कर्मयोद्धा कर रहा है।

वर्तमान में भारत आर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक तथा ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का सिरमौर बन रहा है, यह अच्छा संकेत है। अन्यान्य क्षेत्रों के साथ भारत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर है। सौर ऊर्जा उत्पादन में भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। इसलिए सारा संसार भारत की ओर बड़ी आशा और विश्वास के साथ देख रहा है।

पड़ोसियों का भारत पर अपार विश्वास

भारत अपने पड़ोसी देशों नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार एवं अफगानिस्तान आदि की विपरीत परिस्थितियों के बीच भारी मदद करता रहा है। आसियान के सदस्य देशों की भी भारत समय–समय पर मदद करता रहा है एवं इन देशों का भारत पर अपार विश्वास रहा है। कोरोना के खंडकाल एवं श्रीलंका, म्यांमार तथा अफगानिस्तान में आए सामाजिक संघर्ष के बीच भारत ने इन देशों की मानवीय आधार पर भरपूर आर्थिक सहायता की थी एवं इन्हें अमेरिकी डॉलर में लाइन ऑफ क्रेडिट की सुविधा भी प्रदान की थी, ताकि इनके विदेशी व्यापार को विपरीत रूप से प्रभावित होने से बचाया जा सके।

अफ्रीकी देशों का भी भारत पर बढ़ा विश्वास

भारत ने पिछले कुछ वर्षों में एशिया के कई देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है। अब तो अफ्रीकी देशों का भी भारत पर विश्वास बढ़ता जा रहा है एवं भारत में ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। भारत में हाल ही में अपनी कूटनीतिक एवं राजनयिक क्षमता में भी भरपूर सुधार किया है एवं इसके बल पर वैश्विक स्तर पर न केवल विकसित देशों बल्कि विकासशील देशों को भी प्रभावित करने में सफल रहा है। यूक्रेन एवं रूस युद्ध के समय केवल भारत ही दोनों देशों के साथ चर्चा कर पाता है एवं युद्ध को समाप्त करने का आग्रह दोनों देशों को कर पाता है।

इसी प्रकार, इजरायल एवं हमास युद्ध के समय भी भारत दोनों देशों के साथ युद्ध समाप्त करने की चर्चा करने में अपने आप को सहज एवं सक्षम पाता है। आपस में युद्ध करने वाले दोनों देश भारत की सलाह को गंभीरता से सुनते नजर आते हैं। भारत ने कभी भी विभिन्न देशों के आंतरिक स्थितियों पर अपनी विपरीत राय व्यक्त नहीं की है और न ही कभी उनके आंतरिक मामलों में कभी हस्तक्षेप किया है। इस दृष्टि से वैश्विक पटल पर भारत की यह विशिष्ट पहचान एवं स्थिति है।

समृद्धि के पथ पर पड़े पग,
महिला सुरक्षा पर सरकार सजग

प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पहले दिन से ही महिला सुरक्षा को लेकर बेहद गंभीर और सजग है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वर्ष 2017 में शपथ लेने के बाद से महिला अपराधों पर जीरो टॉलरेंस पालिसी की मंशा जता दी थी। जिसके परिणामस्वरूप आज उत्तर प्रदेश में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की घटनाओं में कमी आई है। प्रदेश में जब महिलाओं के लिए भयमुक्त माहौल हुआ तो उन्होंने भी विकास के पथ पर अपने पग रखे।

विजय गुप्ता
(वरिष्ठ पत्रकार व
सोशल मीडिया एक्सपर्ट)

महिलाओं की सुरक्षाओं को लेकर सजग योगी सरकार ने विगत वर्षों में ऐसे बुनियादी कदम उठाए, जिससे शोहदों पर लगाम लगी और छेड़छाड़ तथा चौन स्नैचिंग जैसी अपराधिक वारदातों पर अंकुश लगा। सरकार के प्रयासों का परिणाम है कि शहरों ही नहीं कस्बों में भी महिलाएं पहले के मुकाबले अब खुद को ज्यादा सुरक्षित महसूस करतीं हैं। शायद इसी कारण से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता पुरुषों के मुकाबलें महिलाओं में अधिक है। प्रदेश में पिछले सात वर्षों के दौरान हुए सभी चुनावों में महिला मतदाताओं ने भाजपा और योगी आदित्यनाथ पर अपना अधिक विश्वास जताया है।

मिशन शक्ति का अनूठा प्रयोग

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए मिशन शक्ति अभियान के तहत पिछले 7 वर्ष में लगभग डेढ़ लाख पुलिस कार्मिकों की भर्ती की गई है। आपको बताते चलें कि वर्ष 2017 के पहले तक प्रदेश में जहां केवल 10 हजार महिला पुलिस आरक्षी थीं। वहीं योगी सरकार के सात वर्षों के दौरान प्रदेश में २० हजार से अधिक महिला पुलिस कांस्टेबल की भर्ती हुई है। पुलिस भर्ती में महिलाओं को 20 प्रतिशत हॉरिजेंटल रिजर्वेशन की व्यवस्था को योगी सरकार ने अनिवार्य रूप से लागू कराया। यही नहीं लखनऊ, गोरखपुर और बदायूं में पीएसी में महिलाओं की वाहिनी का गठन किया जा रहा है। प्रदेश के अंदर 10 हजार से अधिक महिला बीट स्टेशन तैयार किए गए, महिला पिंक बूथ की स्थापना की गई। ये महिला बीट पुलिस अधिकारी मिशन शक्ति के तहत हर सप्ताह महिलाओं से चर्चा कर उनकी समस्याओं को जानने के साथ ही सुरक्षा, स्किल डेवलपमेंट, स्वावलंबन से संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी से महिलाओं को अवगत करा रहीं हैं।

महिलाओं की सुरक्षाओं को लेकर सजग योगी सरकार ने विगत वर्षों में ऐसे बुनियादी कदम उठाए, जिससे शोहदों पर लगाम लगी और छेड़छाड़ तथा चौन स्नैचिंग जैसी अपराधिक वारदातों पर अंकुश लगा। सरकार के प्रयासों का परिणाम है कि शहरों ही नहीं कस्बों में भी महिलाएं पहले के मुकाबले अब खुद को ज्यादा सुरक्षित महसूस करतीं हैं। शायद इसी कारण से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता पुरुषों के मुकाबलें महिलाओं में अधिक है। प्रदेश में पिछले सात वर्षों के दौरान हुए सभी चुनावों में महिला मतदाताओं ने भाजपा और योगी आदित्यनाथ पर अपना अधिक विश्वास जताया है।

दो चक्रीय प्रबंधन से महिला अपराधों पर कसी लगाम

महिलाओं से जुड़े अपराध अमूमन दो तरह के होते हैं। पहला घरेलू हिंसा और दूसरे घर के बाहर हुए अपराध। योगी सरकार ने इस पहलू को ध्यान में रखते हुए महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को लेकर कार्यक्रम बनाएं और उनका क्रियान्वयन कराया। जिसकी वजह से 2017 के बाद से लगातार महिला एवं बाल अपराधों की संख्या में गिरावट आई है। दहेज जैसी घटनाओं में लगभग 17.5 प्रतिशत की कमी आई है। वहीं 2023–24 में बलात्कार की घटनाओं में 25.30 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। यौन उत्पीड़न के मामलों में प्रॉसीक्यूशन विंग की सक्रियता की वजह से 24,402 प्रकरणों में अभियुक्तों को सजा दिलाई जा चुकी है। 2017–24 के बीच पॉक्सो एक्ट में 9875 अभियोगों में सजा दिलाई गई है। 2022 से 2024 के मध्य महिलाओं के विरुद्ध पॉक्सो अपराध में 16,718 अभियुक्तों को सजा दी गई है, जिसमें 21 को मृत्युदंड, 17,013 को आजीवन कारावास, 4653 को दस वर्ष या उससे अधिक का कारावास और 10,331 को दस वर्ष से कम के कारावास की सजा दी गई है।

सभी थानों में महिला हेल्प डेस्क का गठन

योगी सरकार ने प्रदेश के सभी जनपदों में एक महिला थाना स्थापित करने के साथ ही एक अतिरिक्त थाने की जिम्मेदारी भी महिला थानाध्यक्ष को सौंपी गई है। प्रदेश में 1585 थानों में अलग से एक महिला हेल्प डेस्क है। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के लिए 181 की सेवा है, जबकि बाहर के अपराधों के लिए 1090 की सेवा उपलब्ध कराई गई है। इन सब सेवाओं को 112 के साथ इंटीग्रेड किया गया है।

सजा दिलवाने में भी आई तेजी

महिलाओं संबंधी अपराधों के मामले में अदालत में प्रभावी पैरवी से अपराधियों को सजा मिली तो अपराधों पर अंकुश लगा और उनके मन में कानून का खौफ कायम हुआ। जिससे महिला अपराधों की घटनाओं में काफी कमीं आई।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विश्व दिव्यांग दिवस पर लोकभवन में राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित किया। राजकीय स्पर्श बालिका विद्यालय मोहान रोड की छात्रओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सीएम ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना की। सीएम ने प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जयंती (राष्ट्रीय अधिवक्ता दिवस) की भी शुभकामना दी। उन्होंने कहा कि सरकार समाज के हर तबके के लिए कार्य करते हुए पीएम मोदी के विजन 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र के साथ बढ़ रही है।

दिव्यांगजनों ने साबित किया हम किसी से कम नहीं

- मुख्यमंत्री ने विश्व दिव्यांग दिवस पर राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह को किया संबोधित
- मुख्यमंत्री ने 19 लोगों को राज्य स्तरीय, हाईस्कूल- इंटरमीडिएट के उत्तीर्ण विद्यार्थियों को किया पुरसीत
- सीएम ने दिव्यांग विद्यार्थियों को दिया टैबलेट, दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण
- मुख्यमंत्री ने दिव्यांगजनों व पिछड़ा वर्ग कल्याण के लिए की जा रही योजनाओं का जिक्र कर बताई सरकार की उपलब्धि

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री ने दिव्यांग शब्द और भावनाओं को सम्मान देकर उन्हें गरिमामयी पूर्ण तरीके से जीवन व हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। दिव्यांगजनों को जब भी अवसर मिला तो अपनी प्रतिभा से उन्होंने इस शब्द की पुष्टि की। सीएम योगी ने ऋषि अष्टावक्र, महाकवि सूरदास, भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग, जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य समेत अनेक उदाहरण दिए। कहा कि जिन्हें भी मंच व समाज का प्रोत्साहन–संबल मिला तो उन्होंने देश–दुनिया व मानवता को अपनी प्रतिभा का लाभ दिया और यह साबित किया कि वे किसी से कम नहीं हैं। विश्व दिव्यांग दिवस इसी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए समाज को नई प्रेरणा प्रदान करने का माध्यम है।

दृष्टिबाधित, मूकबधिर व अन्य बच्चों के लिए संचालित कॉलेज बढ़ाने की आवश्यकता

सीएम योगी ने कहा कि राज्य के अंदर दो–दो दिव्यांग विश्वविद्यालय (लखनऊ में डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय व चित्रकूट में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विश्वविद्यालय) है। अलग–अलग क्षेत्रों में दृष्टिबाधित, मूकबधिर व अन्य बच्चों के लिए भी कॉलेज संचालित हैं, लेकिन इनकी संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। इसमें प्रशिक्षित शिक्षक हों, उन्हें अच्छा मानदेय, सुविधाएं, प्रशिक्षण मिले और तकनीक से सक्षम बनाया जाए। इस पर और कार्य करने की आवश्यकता है।

स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता के मॉडल हैं रामचंद्र गुप्ता

सीएम योगी ने कहा कि राजकीय सेवाओं में दिव्यांगों के लिए 4 फीसदी आरक्षण की भी व्यवस्था है। कानपुर देहात के रामचंद्र गुप्ता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दिव्यांग होने के बावजूद वे स्वावलंबन और आत्मनिर्भर के मॉडल हैं। अपने माध्यम से बच्चों के लिए बड़ा केंद्र का संचालन करते हैं। इससे साबित होता है कि इच्छाशक्ति होगी तो बड़े से बड़ा कार्य किया जा सकता है। दिव्यांगजनों की प्रतिभा व ऊर्जा का सबसे अच्छा उदाहरण पेरिस पैरालंपिक रहा, जिसमें शानदार प्रदर्शन से मेडल की झड़ी लग गई थी। सीएम ने कहा कि सरकारी भवनों व संस्थाओं से कहा गया है कि दिव्यांगजनों के चढ़ने के लिए रैंप बनवाएं। परिवहन निगम की बसों में दिव्यांगों की निःशुल्क यात्रा के लिए 40 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। शादी–विवाह के लिए (40 फीसदी वाले दंपती) पति के दिव्यांग होने पर 15 हजार, पत्नी के लिए 20 हजार व दोनों के दिव्यांग होने पर 35 हजार रुपये की सहायता उपलब्ध कराते हैं। दुकान निर्माण के लिए 20 हजार व दुकान, गुमटी, हाथ ठेला संचालन के लिए 10 हजार रुपये अनुदान दिया जा रहा है।

कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी के लिए छह लाख रुपये तक की दी गई धनराशि

सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से दिव्यांगजनों के लिए अनेक कार्यक्रम चल रहे हैं। विभिन्न प्रकार की सर्जरी के लिए अनुदान राशि 8 हजार से बढ़ाकर 10 हजार रुपये की गई है। कृत्रिम अंग वितरण, मूकबधिर बच्चों के कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी के लिए छह लाख रुपये तक की राशि दी गई है। प्रदेश में इस वर्ष 24 सर्जरी हुई है। सरकार प्रदेश में तमाम संस्थाओं के संचालन में भी मदद कर रही है। प्री प्राइमरी से लेकर बचपन डे केयर्स स्थापना के साथ ही मेरठ, बरेली व गोरखपुर में मानसिक मंदित आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केंद्र संचालित हैं।

चुपचाप तैयारी करेंगे तो रिजल्ट प्रतिभा को प्रदर्शित करेगा

सीएम योगी ने कहा कि कार्य करने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए, फंड बाधा नहीं है। यदि चुपचाप तैयारी करेंगे तो रिजल्ट प्रतिभा को प्रदर्शित कर देगा। सीएम ने बताया कि 2017 में प्रदेश में केवल 7–8 लाख दिव्यांगजनों को पेंशन मिलती थी, वह भी महज 300–300 रुपये। यह राशि छह महीने में आती थी तो आधा पैसा बाबू खा जाता था, लेकिन हम लोग सीधे लाभार्थी के खाते में धनराशि भेजते हैं। हमने यह राशि 300 रुपये से बढ़ाकर एक हजार रुपये की। अब 11 लाख दिव्यांगजन 12 हजार रुपये वार्षिक पेंशन का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। तीन हजार रुपये मासिक कुष्ठावस्था पेंशन पीड़ित व्यक्ति के परिवार को उपलब्ध कराते हैं। यह भी तय किया गया कि इन परिवारों को पीएम/सीएम आवास भी देंगे।

पिछड़ा वर्ग कल्याण के लिए भी अनेक कार्य कर रही सरकार

सीएम योगी ने कहा कि पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग से जुड़े अनेक कार्यक्रमों को सरकार ने बढ़ाया। 2016–17 में विभाग को 1295 करोड़ बजट दिया जाता था, अब यह राशि लगभग 2800 करोड़ रुपये हो गई। इसमें 116 प्रतिशत की वृद्धि की गई। 2016–17 में पूर्वदशम छात्रवृत्ति योजना के लिए 107 करोड़ बजट आवंटित था, इससे 5.19 लाख छात्र–छात्राएं लाभान्वित होती थीं। अब बजट 160.16 करोड़ किया गया है, जिससे 7.58 लाख विद्यार्थी लाभ ले रहे हैं। पिछड़ा वर्ग से जुड़े छात्रों की छात्रवृत्ति के लिए 300 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। 2016–17 में 983 करोड़ की लागत से 13.64 लाख बच्चे दशमोत्तर छात्रवृत्ति का लाभ प्राप्त करते थे। उस समय केवल 11.13 लाख छात्रों को शुल्क प्रतिपूर्ति का लाभ दिया जाता था। अब 2070 करोड़ रुपये से 19.80 लाख छात्र–छात्राओं को दशमोत्तर छात्रवृत्ति और शुल्क प्रतिपूर्ति का लाभ मिल रहा है यानी 2016–17 की तुलना में आज 1100 करोड़ रुपये अतिरिक्त दशमोत्तर छात्रों को छात्रवृत्ति व शुल्क प्रतिपूर्ति का लाभ दे रहे। इससे 7 लाख अतिरिक्त बच्चे लाभान्वित हो रहे। 2016–17 में अनुदान राशि 141 करोड़ रुपये से 70 हजार बेटियों को लाभ प्राप्त हो पाया था। इस समय 200 करोड़ रुपये की लागत से एक लाख बेटियों को लाभान्वित किया जा रहा है।

इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग कल्याण व दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप, समाज कल्याण राज्यमंत्री संजीव गोंड, मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह, प्रमुख सचिव सुभाष चंद शर्मा, डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के कुलपति संजय सिंह आदि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री के हाथों मिला सम्मान हुए अभिभूत

लखनऊ

सीएम ने विश्व दिव्यांग दिवस पर लोकभवन में प्रतिभाओं का किया सम्मान
सीएम ने प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार राशि, अंगवस्त्र प्रदान किया

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों सम्मान पाकर प्रतिभाएं अभिभूत हुईं। सीएम ने इसके साथ ही दिव्यांगों के उत्थान के लिए कार्य करने वालों को भी सम्मानित किया। सीएम ने 40 दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरित किए। 324 दिव्यांग विद्यार्थियों को टैबलेट भी दिए गए। सीएम के द्वारा मंगलवार को पिछड़ा वर्ग से जुड़े दो लाख 53 हजार 211 से अधिक बच्चों को 54.38 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति भी डीबीटी के माध्यम से सीधे अकाउंट में भेज दी गई। पिछड़ा वर्ग से जुड़े 28 युवाओं को कंप्यूटर प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र भी उपलब्ध हुआ है। इसमें से कई प्रतिभाओं को सीएम ने मंच पर प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार राशि, टैबलेट, अंगवस्त्र व प्रमाणपत्र आदि प्रदान किया।

सीएम ने वाराणसी व मुरादाबाद के सीडीओ को किया सम्मानित

कार्यक्रम में उत्कृष्ट दिव्यांग व्यक्तियों, दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों, स्वैच्छिक संगठनों और दिव्यांग खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष वाराणसी जिले को पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने में सर्वश्रेष्ठ जिला चुना गया। इसके लिए मुख्य विकास अधिकारी हिमांशु नागपाल ने सम्मान प्राप्त किया। मुख्य विकास अधिकारी मुरादाबाद सुमित यादव को बाधामुक्त वातावरण के सृजन के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। सीएम ने दोनों अधिकारियों को सम्मानित किया।

वाराणसी की नई सुबह संस्था व जन विकास समिति भी पुरस्कृत

गैर–व्यावसायिक श्रेणी में डॉ. कौशिकी सिंह (लखनऊ) और व्यावसायिक श्रेणी में राम किशन गुप्ता (कानपुर नगर) को दिव्यांगजन के हित में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए पुरस्कृत किया गया। सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग कर्मचारी के रूप में संतबली चौधरी (गोरखपुर), अरुण कुमार अग्रवाल (लखनऊ) और गोपाल कृष्ण त्रिपाठी (कानपुर नगर) को सम्मानित किया गया। पुनर्वास सेवाओं में योगदान के लिए नई सुबह संस्था (वाराणसी) और सर्वश्रेष्ठ नवीन अनुसंधान के लिए जन विकास समिति (वाराणसी) को पुरस्कृत किया गया। इन्हें भी सीएम के हाथों पुरस्कृत होने का अवसर मिला।

प्रगति व दीपेंद्र को सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ी के रूप में सम्मानित

सीएम योगी आदित्यनाथ ने प्रेरणास्रोत श्रेणी में मानवेन्द्र प्रताप सिंह (लखनऊ), मुकेश मिश्रा (लखनऊ) और स्वामी प्रताप सिंह (आगरा) को सम्मानित किया। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ सृजनशील दिव्यांग बालिका के रूप में कु. दिव्यांशी कसौधन (गोरखपुर) और सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ी के रूप में महिला श्रेणी में कु. प्रगति केसरवानी (लखनऊ) व पुरुष श्रेणी में दीपेन्द्र सिंह (संभल) को पुरस्कृत किया गया।

स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इंटर कॉलेज गोरखपुर के प्रधानाचार्य का सम्मान

सर्वश्रेष्ठ अधिकारी के रूप में लक्ष्मीशंकर जायसवाल, प्रधानाचार्य, स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इण्टर कालेज (गोरखपुर) और सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में प्रशान्त कुमार, वरिष्ठ सहायक कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी (कानपुर नगर) को सम्मानित किया गया। सृजनशील दिव्यांग पुरुष श्रेणी में अनूप कुमार सिंह (कुशीनगर) और महिला श्रेणी में रीतू पटेल (वाराणसी) को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। इन्हें भी सीएम योगी आदित्यनाथ के हाथों पुरस्कार मिला।

सीएम ने हाईस्कूल–इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों को किया पुरस्कृत

सीएम योगी ने शैक्षणिक सत्र 2023–24 में हाईस्कूल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इंटर कॉलेज लखनऊ के अर्पित सिंह (90.16 प्रतिशत), नेहा मौर्या (89.83 फीसदी), स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इंटर कॉलेज गोरखपुर के बृजेश (इंटरमीडिएट–86.80 प्रतिशत) व लखनऊ की तनु तिवारी (85.08 फीसदी) को सम्मानित किया।

इन्हें भी सीएम के हाथों मिला सम्मान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय की संजीता विश्वकर्मा, विजय कुमार, रामअनुज, आफरीन खातून, प्रीति कुमारी, नवीन जायसवाल को टैबलेट प्रदान किया। साथ ही पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना के विद्यार्थी प्रिंस कुमार पाल, प्रीति यादव को सम्मानित किया।

सीएम ने फिर चेताया
बांटने वाले काटने और कटवाने
का कर रहे इंतजाम

अयोध्या

- मुख्यमंत्री ने रामकथा पार्क में किया 43वें रामायण मेला का शुभारंभ
- 500 वर्ष पहले बाबर के सिपहसालार ने अयोध्या, संभल में जो कृत्य किया था और आज जो बांग्लादेश में हो रहा है, तीनों की प्रीति-डीएनए एक जैसा : योगी
- बांटने वालों की कई देशों में है प्रज्जपर्टी, यहां संकट आया तो वे वहां भाग जाएंगे : सीएम
- सीएम ने दिलाया विश्वास-प्रभु श्रीराम के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त कर हम पीएम मोदी के 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में देंगे योगदान ।
- दुनिया के लिए मार्गदर्शक है अयोध्या : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहाकि कि 500 वर्ष पहले बाबर के सिपहसालार ने अयोध्या, संभल में जो कृत्य किया था और जो काम आज बांग्लादेश में हो रहा है, तीनों की प्रकृति–डीएनए एक जैसा है। कोई मानता है कि यह बांग्लादेश में हो रहा है तो गलतफहमी में न रहे। यहां भी बांटने वाले तत्व पहले से खड़े हैं। वे सामाजिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न और सामाजिक एकता को तोड़कर, आपको बांटकर फिर काटने व कटवाने का इंतजाम भी कर रहे हैं। बांटने वाले बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जिन्होंने दुनिया के कई देशों में प्रॉपर्टी खरीद रखी है। यहां संकट आएगा तो वे वहां भाग जाएंगे और मरने वाले मरते रहेंगे, लेकिन हम प्रभु के आदर्शों से प्रेरणा लेकर उसके अनुरूप खुद को तैयार करते हुए पीएम मोदी के 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में योगदान देंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामायण मेला समिति द्वारा आयोजित 43वें रामायण मेला का गुरुवार को रामकथा पार्क में शुभारंभ किया। इस दौरान सीएम ने पुस्तिका का विमोचन भी किया। सीएम ने रामायण मेला समिति को आश्वस्त किया कि अयोध्या में कुछ नया लेकर आइए, सरकार सदा आपके साथ है। उन्होंने रामायण पर शोध की आवश्यकता पर बल दिया। सीएम ने कहा कि अयोध्या धाम को पुरातन गौरव प्राप्त हो। इसके लिए सरकार नित कार्य कर रही है।

हमने जोड़ने को महत्व दिया होता तो तोड़ने वालों की रणनीति सफल नहीं होती

सीएम योगी ने कहा कि भगवान राम ने पूरे भारत व समाज को जोड़ने का कार्य किया। जोड़ने के कार्य को हमने महत्व दिया होता और सामाजिक विद्वेष–समाज को तोड़ने की दुश्मनों की रणनीति को सफल नहीं होने देते तो देश कभी गुलाम नहीं होता और न ही तीर्थ अपवित्र होते। मुठ्ठी भर आक्रांताओं को भारत के वीर योद्धा रौंद डालते, लेकिन आपसी एकता में बाधा पैदा करने वाले सफल रहे। उन्हीं के जींस आज भी जाति के नाम पर राजनीति करने वाले सामाजिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।

दुनिया के लिए मार्गदर्शक है अयोध्या

सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या ने हजारों वर्षों से विश्व कल्याण की मानवता का मार्ग प्रशस्त किया है। अयोध्या दुनिया के लिए मार्गदर्शक है। यहां कोई युद्ध करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। राग–द्वेष से मुक्त अयोध्या दुनिया में चल रहे द्वंद्व के समाधान की भूमि है। प्रभु कृपा से अयोध्या धाम आज आध्यात्मिक व सांस्कृतिक रूप से

जब एक फिट जमीन के लिए हो रहा कत्लेआम तो राम के आदर्श ही करने होंगे स्थापित

सीएम योगी ने कहा कि प्रभु के आदर्शों से प्रेरणा लेंगे तो जन्म और जीवन धन्य हो जाएगा। महाराज दशरथ ने श्रीराम से कहा कि तुम कैकैयी के वचन न मानो और यहां की गद्दी पर स्थापित हो। तब श्रीराम ने कहा कि ऐसा किया तो भावी पीढ़ी के सामने कौन सा आदर्श होगा। आज एक–एक फिट जमीन के लिए कत्लेआम हो रहा हो, भाई–भाई, पिता–पुत्र, मां–पुत्र, भाई–बहन के विवाद दिख रहे हैं तो रामायण के आदर्श कहां गए। जातीय संगठन सामाजिक व्यवस्था को तार–तार कर रहे हैं। आज भगवान राम व निषादराज की मैत्री को आखिर कौन जोड़ेगा। प्रभु श्रीराम ने चित्रकूट के सामाजिक जीवन को जीवंतता दी। सीएम ने श्रीराम के आदर्श की चर्चा करते हुए कहा कि वे किष्किंधा का राज्य जीतते हैं, लेकिन राज्याभिषेक सुग्रीव और लंका जीतते हैं तो राज्याभिषेक विभीषण का करते हैं। हमारी सरकार ने 56 फुट ऊंची प्रतिमा को श्रृंगवेरपुर में स्थापित किया है।

जिनके मन में श्रीराम व मां जानकी के प्रति श्रद्धा का भाव नहीं, उसे त्याग देना चाहिए

सीएम योगी ने कहा कि श्रीराम के प्रति भारत का भाव क्या है, इसका अनुभव करना हो तो गांव–गांव में संत तुलसीदास द्वारा प्रारंभ किए गए रामलीलाओं का आयोजन देखिए। प्रभु राम के प्रति सनातन धर्मावलंबियों के भाव का अनुभव करना है तो 1990 के दशक को याद कीजिए, जब हर घर में टीवी नहीं थी, लेकिन लोग सूदूर जाकर दूरदर्शन पर रामायण सीरियल देखते थे। यह प्रभु राम के प्रति भारत की सनातन श्रद्धा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जिसके मन में श्रीराम व मां जानकी के प्रति श्रद्धा व समर्पण का भाव नहीं हैं, उसे कट्टर दुश्मन की तरह त्याग देना चाहिए। 1990 में रामभक्तों ने भी नारा लगाया था, जो राम का नहीं–वो किसी काम का नहीं।

इस अवसर पर मणिराम दास छावनी के महंत व आयोजन समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष महंत कमलनयन दास जी महाराज, जगद्गुरु स्वामी रामदिनेशाचार्य जी महाराज, जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, बड़े भक्तमाल मंदिर के महंत अवधेश कुमार दास जी महाराज, पूर्व सांसद डॉ. रामविलास वेदांती, सुनीता शास्त्री, कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही, विधायक वेदप्रकाश गुप्त, कमलेश सिंह, नागा रामलखन दास, संयोजक आशीष मिश्र आदि मौजूद रहे। संचालन डॉ. जनार्दन उपाध्याय ने किया।

वैश्विक नगरी के रूप में फिर से नई पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है। जनवरी में पीएम नरेंद्र मोदी के करकमलों से 500 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद प्रभु फिर से राम मंदिर में विराजमान हुए हैं। 22 जनवरी को आयोजन अयोध्या में था, लेकिन उत्सव पूरा देश–दुनिया में मनाया जा रहा था।

लोहिया जी कहते थे–जब तक श्रीराम, श्रीष्ण व भगवान शिव के प्रति आस्था रहेगी, भारत का कोई बालबांका नहीं कर पाएगा

सीएम योगी ने कहा कि यह रामायण मेला 1982 में प्रारंभ हुआ। इससे पहले समाजवादी चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया ने अलग–अलग क्षेत्रों में रामायण मेला, रामायण उत्सव के कार्यक्रम प्रारंभ कराए। उनसे एक पत्रकार ने पूछा कि इतनी विषमता के बावजूद भारत एक कैसे है, तब उन्होंने कहा कि मैं मंदिर नहीं जाता, लेकिन दृढ़ विश्वास है कि जब तक भारत की आस्था तीन आराध्य देव (श्रीराम, श्रीकृष्ण व भगवान शिव) के प्रति बनी रहेगी, तब तक इसका कोई बालबांका नहीं कर पाएगा। इसकी एकता–अखंडता को कोई चुनौती नहीं दे पाएगा। भारत–भारत बना रहेगा। उन्होंने अपने उदाहरण से बताया कि आर्यवत की सीमा सीमित थी, लेकिन हजारों वर्ष पहले हमारे आराध्य श्रीराम ने इसे विस्तार दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने पूरब को पश्चिम से जोड़ने का कार्य किया। भगवान शंकर ने द्वाद्वश ज्योतिर्लिंग के माध्यम से सनातन एकता को सुदृढ़ किया। सीएम ने कहा कि अब के समाजवादी डॉ. लोहिया का आदर्शन नहीं मानते।

- किले और हवेलियों को उपयोगी बनाने के लिए **60** से अधिक राजा-महाराजा के साथ होगा विचार मंथन
- देश भर से लगभग **250** प्रसिद्ध होटल मालिक, इन्वेस्टर्स, रियल एस्टेट व्यवसायी और कंसल्टेंट भी लेंगे हिस्सा

सीएम योगी के निर्देशन में हेरिटेज कॉन्क्लेव का आयोजन करेगा पर्यटन विभाग

लखनऊ

पर्यटन में सर्वाधिक विकास करने वाला राज्य बना उत्तर प्रदेश

अपने समृद्ध अतीत की कहानी बयां कर रहे उत्तर प्रदेश के किले, कोठी और पैलेस विकास की नई गाथा लिखेंगे। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग इसकी नींव रखने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन में सात दिसंबर को लखनऊ स्थित होटल ताज में हेरिटेज कॉन्क्लेव का आयोजन होगा। इसमें 60 से अधिक राजा–महाराजा के साथ संवाद के लिए देश भर से लगभग 250 प्रसिद्ध होटल मालिक, इन्वेस्टर्स, रियल स्टेट व्यवसायी और कंसल्टेंट आएंगे। सहमति बनी तो उत्तर प्रदेश विरासत पर्यटन में भी देश–दुनिया को आकर्षित करने वाला प्रमुख गंतव्य स्थल बनेगा।

योगी सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश हाल के वर्षों में पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास करने वाला राज्य बनकर उभरा है। बीते वर्ष 2023 में यहां 48 करोड़ से अधिक पर्यटक आए थे। अयोध्या, काशी, मथुरा, प्रयागराज सहित अन्य तीर्थ स्थल सर्वाधिक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। उत्तर प्रदेश में हेरिटेज टूरिज्म की असीम संभावनाएं हैं। यहां बड़ी संख्या में किले, पैलेस और कोठिया हैं, जिन्हें उपयोगी बनाकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। विरासत पर्यटन में अग्रिम पंक्ति में खड़े राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों की तर्ज पर पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश में भी तैयारी कर रहा है।

250 से अधिक लोगों को किया गया आमंत्रित

पर्यटन मंत्री ने बताया कि राज्य में अनेक संपत्तियां जो राजा–महाराजा के पास है, इनका विकास कर उपयोगी बनाने की मंशा है। विभाग द्वारा आयोजित कॉन्क्लेव में 60 से अधिक राजा–महाराजा और देश भर से लगभग 250 प्रसिद्ध होटल मालिक, इन्वेस्टर्स, रियल एस्टेट व्यवसायी और कंसल्टेंट को आमंत्रित किया गया। इनके बीच सीधा संवाद होने से सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

कॉन्क्लेव में होंगे कई एमओयू

प्रदेश में स्थित किले, पैलेस और कोठियों को उनके वास्तविक स्वरूप, वास्तुकला और जो उनकी अन्य विशेषताएं हैं, उन्हें बरकरार रखते हुए यहां हेरिटेज होटल, वेडिंग डेस्टिनेशन, वेलनेस सेंटर, रिजार्ट, कल्चरल सेंटर आदि बनाने की योजना है। इसके तहत पर्यटन विभाग अपनी छह प्रापर्टीज चुनार का किला मीरजापुर, बरुआसागर का किला झांसी, छतर मंजिल लखनऊ, बरसाना महल मथुरा, शुक्ल तालाब कानपुर देहात और रोशन–उद–दौला लखनऊ को हाल ही में पीपीपी पर दिया है। कॉन्क्लेव में इनका एमओयू भी होगा। विभाग की ऐसी अन्य प्रापर्टी को पीपीपी पर विकसित करने की तैयारी है।

रोजगार के अवसर लेकर आएगा कॉन्क्लेव

पर्यटन मंत्री ने बताया कि हेरिटेज कॉन्क्लेव प्रदेश में हेरिटेज टूरिज्म को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होगा। गंतव्य स्थलों पर देश–विदेश से बड़ी संख्या में आगंतुक आएंगे। यह प्रयास स्थानीय लोगों के सामने रोजगार का बड़ा अवसर लेकर आएगा।

उत्तराखंड में महिला कल्याण की कई योजनाएं हैं, जिनमें से एक प्रमुख योजना 'मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना' है। यह योजना महिलाओं और बेटियों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है।

बेटियों के लिए वरदान बनी धामी सरकार की 'मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना'

द यूथ आइडियाज, देहरादून

मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना

यह योजना मुख्य रूप से नवजात बेटियों और उनकी माताओं के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करती है।

योजना के उद्देश्यरू

बालिकाओं के जन्म को प्रोत्साहित करना।

गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं का पोषण सुनिश्चित करना।

लैंगिक असमानता को कम करना और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

योजना के तहत लाभरू

पहली बार जन्म लेने वाली बेटीरू बेटी के जन्म पर माँ और बेटी को कपड़े, पौष्टिक आहार, और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है।

दूसरी बार बेटी के जन्म पररू दूसरी बेटी के जन्म पर भी सहायता राशि प्रदान की जाती है।

आवेदन करने की प्रक्रिया :

ऑनलाइन आवेदनः

उत्तराखंड सरकार की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं e-Samadhan या उत्तराखंड महिला एवं बाल विकास विभाग।

'मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना' के लिए निर्धारित फॉर्म डाउनलोड करें।

आवश्यक दस्तावेजों के साथ फॉर्म को ऑनलाइन जमा करें।

ऑफलाइन आवेदन :

- अपने नजदीकी आंगनवाड़ी केंद्र या महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय से संपर्क करें।
- फॉर्म भरें और जरूरी दस्तावेज जैसेरू
- आधार कार्ड (माँ और बच्ची का)
- जन्म प्रमाण पत्र
- बैंक खाता विवरण
- राशन कार्ड या बीपीएल प्रमाण पत्र इन दस्तावेजों के साथ आवेदन जमा करें।

महत्वपूर्ण दस्तावेज :

- नवजात शिशु का जन्म प्रमाण पत्र।
- माँ और पिता का आधार कार्ड।
- परिवार का राशन कार्ड या बीपीएल प्रमाणपत्र।
- बैंक पासबुक की कॉपी।

योजना का लाभ उठाने की समय सीमा :

बेटी के जन्म के 6 महीने के भीतर आवेदन करना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए संपकरूं

महिला एवं बाल विकास विभाग, उत्तराखंड।

टोल–फ्री हेल्पलाइन नंबररू 1098 (चाइल्ड हेल्पलाइन)।

यह योजना महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से मदद करती है, बल्कि उनके सशक्तिकरण और सम्मान को भी बढ़ावा देती है।

औली

भारत का स्विटजरलैंड

उत्तराखंड ब्यूरो

उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित औली, हिमालय की गोद में बसा एक ऐसा स्वर्ग है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, बर्फीले पहाड़ों, और शांत वातावरण के लिए मशहूर है। यह स्थान न केवल देशभर से बल्कि विदेशों से भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। औली, जिसे ष्स्कीइंग का स्वर्गष् कहा जाता है, सर्दियों में बर्फ से ढकी ढलानों और गर्मियों में हरे–भरे चारागाहों के कारण सालभर आकर्षण का केंद्र बना रहता है।

प्राकृतिक सुंदरता

औली की खूबसूरती का पहला परिचय यहाँ की हिमालयी चोटियों से होता है। नंदा देवी, त्रिशूल, और कामेट जैसे पर्वत यहाँ से साफ नजर आते हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय इन चोटियों पर पड़ती सुनहरी किरणें मन को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। देवदार और ओक के घने जंगल, जिनमें बर्फ की चादर सजी रहती है, यहाँ की खूबसूरती को और बढ़ाते हैं।

स्कीइंग का स्वर्ग

औली का सबसे बड़ा आकर्षण इसका स्कीइंग स्थल है। यहां की बर्फीली ढलानें विश्व स्तरीय स्कीइंग के लिए जानी जाती हैं। औली में हर साल राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्कीइंग प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं। स्कीइंग के लिए यहां स्नोबोर्डिंग, गियर और प्रशिक्षक उपलब्ध रहते हैं, जिससे नए और अनुभवी दोनों प्रकार के लोग इसका आनंद ले सकते हैं।

केबल कार और ट्रैकिंग

जो पर्यटक स्कीइंग में रुचि नहीं रखते, उनके लिए 4 किलोमीटर लंबी केबल कार यात्रा एक शानदार अनुभव है। यह भारत की दूसरी सबसे लंबी केबल कार है, जो जोशीमठ से औली तक जाती है। ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए औली से गोरसों बुग्याल, चत्रकुंड और कुआरी पास जैसे ट्रैक बेहद आकर्षक हैं।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

औली का धार्मिक महत्व भी कम नहीं है। यह स्थान बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब जैसे प्रमुख तीर्थस्थलों के करीब है। इसके अलावा, औली के पास स्थित जोशीमठ में आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित ज्योतिर्मठ देखने योग्य है।

सही समय और यात्रा योजना

औली जाने का सबसे अच्छा समय सर्दियों (दिसंबर से फरवरी) में है, जब यहां बर्फबारी होती है। गर्मियों (मार्च से जून) में भी औली का मौसम सुखद रहता है और यह जगह हाइकिंग और शांतिपूर्ण छुट्टियों के लिए उपयुक्त है।

औली तक पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन हरिद्वार और एयरपोर्ट जौलीग्रांट (देहरादून) है। यहां से सड़क मार्ग द्वारा जोशीमठ और फिर औली तक पहुंचा जा सकता है।

औली एक ऐसा स्थान है, जहाँ प्राकृतिक सुंदरता, रोमांच और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम है। अगर आप भी प्रकृति की गोद में कुछ सुकून के पल बिताना चाहते हैं, तो औली एक आदर्श विकल्प है। चाहे बर्फ के खेल हों, जंगलों में सैर हो, या हिमालय की चोटियों के दर्शन, औली हर किसी के लिए कुछ न कुछ खास लेकर आता है।

बरेली बनारस के बीच 'अयोध्या'

इस बार बरेली से बनारस आते वक्त शाम को चार बजे ट्रेन थी। इस ट्रेन में सफर का यह पहला अवसर था। पिछले दो–तीन दशक से काशी विश्वनाथ अथवा श्रमजीवी एक्सप्रेस ही वाराणसी आवागमन का माध्यम रहीं। पर, इस बार इन दोनों में टिकट उपलब्ध न था। टिकट एजेंट ने विकल्प के रूप में मौजूदा ट्रेन को बेहतर बताया। साथ ही टिकट भी उपलब्ध होने का आश्वासन दिया।राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी में संस्कृत संभाषण वीडियो निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला में प्रतिभाग करना था। इसलिए यात्रा अनिवार्य थी और अपरिहार्य भी।

इस ट्रेन से पहली बार यात्रा कर रहा था। इस कारण रूट क्या रहेगा यह मेरी जानकारी में नहीं था। यूँ भी यात्रा के दौरान सामान्यतः यात्रारंभ से गंतव्य तक पहुँचने के समय और स्थान पर ही विशेष ध्यान केंद्रित रहता है।

घर से खाना–पानी लेकर नियत समय पर बरेली जंक्शन पहुँच गया। ट्रेन आधा घंटा विलंब थी। ए–वन कोच में लोअर बर्थ का मैसेज मोबाइल पर आ चुका था।

ट्रेन शुरू हुई तो शाहजहांपुर पहुँचने तक भोजन हो गया। सामान्यतः सोने के बाद मुझे पानी की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। ट्रेन को सुबह सात बजे बनारस पहुँचना था ,अतः बोतल में शेष रहा पानी शाम साढ़े सात से आठ बजे के बीच पीकर आश्वस्त भाव से निद्रामग्न हो गया।

रात को सवा से ड़ेढ़ बजे के आसपास कुछ बेचौनी सी महसूस हुई। बहुत तेज प्यास लगी। पर अपने पास पानी नहीं था। ट्रेन में पैंट्रीकार नहीं थी। न ही ऐसा समय था कि कोई पानी विक्रेता घूम रहा होता।

इस समय गाड़ी किसी स्टेशन पर खड़ी थी। दरवाजा खोलकर बाहर झाँका मेरा कोच इंजन से एक–दो कोच पीछे ही था इसलिए दूर तक कोई दुकान दिखाई न दी। मन मारकर वापस बर्थ पर लौट आया।पर पानी की तीव्र इच्छा निरन्तर बढ़ती जा रही थी।

डॉ0 अवनीश यादव
प्रांतीय शिक्षा सेवा संवर्ग (पी0ई0एस0)
उत्तर प्रदेश

आसपास के यात्रियों के घनघोर खर्राटे संकेत दे रहे थे कि उन्हें डिस्टर्ब न किया जाए।उनके आस–पास लगे बॉटल स्टैंड भी खाली थे। मन ही मन प्रार्थना की 'हे प्रभु! इस समस्या का समाधान करो'

ट्रेन अभी भी खड़ी थी। पुनः दरवाजा खोला और स्टेशन की दिशा में चलना आरंभ किया। तीन कोच पार करने पर टीटीई खड़े मिले ।स्टेशन का नाम पूछा। बोले 'अयोध्या'। हाथ जोड़ कर वहीं से प्रभु श्रीराम का वंदन किया।यह अयोध्या की पावन धरा पर मेरी प्रथम उपस्थिति थी। जो निश्चित ही दैवीय कृपा से संभव हुई और जिसमें पानी परिस्थिति बना।

'मुझे पानी लेना है। ट्रेन कितना देर रुकेगी' –मैंने टीटीई से पूछा। 'बस थोड़ी देर और। आप ऐसा करिए कोच के अंदर अंदर जाइए। जहाँ वेंडर दिखे दौड़कर पानी ले लें। यदि ट्रेन चलने लगे तो जो भी कोच सामने आये चढ़ जाइएगा।'

मैंने टीटीई के सुझाव पर ध्यान देते हुए कोच के अंदर–अंदर चलना प्रारंभ किया। हर कोच में सोने वालों की घरघराहटों का शोर मध्यरात्रि की नीरवता को भंग कर रहा था। कुछ कोच पार करते ही स्टेशन के प्रवेश द्वार के निकट एक दुकान दिखी।मैं तेजी से उतरा, पानी की बोतल ली और तत्परतापूर्वक ट्रेन की ओर देखते हुए पानी पिया।

ट्रेन अभी भी खड़ी थी। बुजुर्ग दूकानदार अदरक कूट रहे थे। भगौने में चाय उबल रही थी। मन हुआ चाय भी पी ली जाय। पर ट्रेन चल देने की हड़बड़ी भी थी। 'क्या ट्रेन अभी कुछ देर और रुकेगी? चाय पीने का मन है '–मैंने अदरक कूटकर चाय में डाल रहे विक्रेता से सवाल किया।

'मन है तो जरूर पीजिएगा। मन की इच्छा रामजी की इच्छा। ट्रेन जरूर रुकेगी'– दुकानदार ने पूरे विश्वास और आत्मीयता से चाय का कुल्हड़ मुझे थमाते हुए कहा।

मैंने आराम से चाय पी।ट्रेन पर भी नजर रखी। चाय–पानी का पेमेंट किया और सामने के कोच से अंदर होते हुए अपनी बर्थ पर आकर बैठा ही था कि हल्के से झटके के साथ ट्रेन चल पड़ी।

मैंने पुनः भगवान श्रीराम का स्मरण किया और चादर ओढ़ कर लेट गया। कब गहरी नींद ने आगोश में ले लिया पता ही न चला।

समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से सम्बद्ध है प्रयागराज का यह प्रसिद्ध मंदिर

- समुद्र मंथन के बाद सर्पराज नाग वासुकि ने यहां किया था विश्राम
- भगवान शिव के कण्ठहार नाग वासुकि के दर्शन मात्र से दूर होता है कालसर्प दोष
- नागपंचमी और सावन माह में दर्शन का है विशेष महत्व
- मान्यता है कि त्रिवेणी संगम के स्नान के बाद नाग वासुकि के दर्शन से ही होती है पूर्ण फल की प्राप्ति
- सीएम योगी के प्रयासों से महाकुम्भ में मंदिर का हुआ है जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण

प्रयागराज

तीर्थराज प्रयागराज के पौराणिक मंदिरों में नागवासुकी मंदिर का विशेष स्थान है। सनातन आस्था में नागों या सर्प की पूजा प्राचीन काल की जाती रही है। पुराणों में कई नागों की कथाओं का वर्णन है जिनमें से नागवासुकी को सर्पराज माना जाता है। नागवासुकी भगवान शिव के कण्ठहार हैं, समुद्र मंथन की पौराणिक कथा के अनुसार नागवासुकी सागर को मथने के लिए रस्सी के रूप में प्रयुक्त हुए थे। समुद्र मंथन के बाद भगवान विष्णु के कहने पर नागवासुकि ने प्रयाग में विश्राम किया। देवताओं के आग्रह पर वो यहां ही स्थापित हो गये। मान्यता है कि प्रयागराज में संगम स्नान के बाद नागवासुकि का दर्शन करने से ही पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। नागवासुकि जी का मंदिर वर्तमान काल में प्रयागराज के दारागंज मोहल्ले में गंगा नदी के तट पर स्थित है।

समुद्र मंथन के बाद सर्पराज नाग वासुकि ने प्रयाग में किया था विश्राम

नागवासुकि जी कथा का वर्णन स्कंद पुराण, पद्म पुराण,भागवत पुराण और महाभारत में भी मिलता है। समुद्र मंथन की कथा में वर्णन आता है कि जब देव और असुर, भगवान विष्णु के कहने पर सागर को मथने के लिए तैयार हुए तो मंदराचल पर्वत मथानी और नागवासुकि को रस्सी बनाया गया था। लेकिन मंदराचल पर्वत की रगड़ से नागवासुकि जी का शरीर छिल गया था। तब भगवान विष्णु के ही कहने पर उन्होंने प्रयाग में विश्राम किया और त्रिवेणी संगम में स्नान कर घावों से मुक्ति प्राप्त की। वाराणसी के राजा दिवोदास ने तपस्या कर उनसे भगवान शिव की नगरी काशी चलने का वरदान मांगा। दिवोदास की तपस्या से प्रसन्न होकर जब नागवासुकि प्रयाग से जाने लगे तो देवताओं ने उनसे प्रयाग में ही रहने का आग्रह किया। तब नागवासुकि ने कहा कि, यदि मैं प्रयागराज में रुकूंगा तो संगम स्नान के बाद श्रद्धालुओं के लिए मेरा दर्शन करना अनिवार्य होगा और सावन मास की पंचमी के दिन तीनों लोकों में मेरी पूजा होनी चाहिए। देवताओं ने उनकी इन मांगों को स्वीकार कर लिया। तब ब्रह्माजी के मानस पुत्र द्वारा मंदिर बना कर नागवासुकि को प्रयागराज के उत्तर पश्चिम में संगम तट पर स्थापित किया गया।

नागवासुकि मंदिर में स्थित था भोगवती तीर्थ

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार जब देव नदी गंगा जी का धरती पर अवतरण हुआ तो भगवान शिव की जटा से उतर कर भी मां गंगा का वेग अत्यंत तीव्र था और वो सीधे पाताल में प्रवेश कर रहीं थी। तब नागवासुकि ने ही अपने फन से भोगवती तीर्थ का निर्माण किया था। नागवासुकि मंदिर के पुजारी श्याम लाल त्रिपाठी ने बताया कि प्राचीन काल में मंदिर के पश्चिमी भाग में भोगवती तीर्थ कुंड था जो वर्तमान में कालकवलित हो गया है। मान्यता है बाढ़ के समय जब मां गंगा मंदिर की सीढ़ियों को स्पर्श करती उस समय इस घाट पर गंगा स्नान से भोगवती तीर्थ के स्नान का पुण्य मिलता है।

सीएम योगी के प्रयासों से हो रहा है मंदिर का जीर्णोद्धार

पौराणिक वर्णन के अनुसार प्रयागराज के द्वादश माधवों में से असि माधव का स्थान भी मंदिर में ही था। सीएम योगी आदित्यनाथ जी के प्रयास से इस वर्ष देवोत्थान एकादशी के दिन असि माधव जी के नये मंदिर में उन्हें पुनः प्रतिष्ठित किया गया है। उन्होंने बताया कि इससे पहले सांसद मुरली मनोहर जोशी ने भी मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। इस महाकुम्भ में नागवासुकि मंदिर और उनके प्रांगण का जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण का कार्य हुआ है। यूपी सरकार और पर्यटन विभाग के प्रयासों से मंदिर की महत्ता से नई पीढ़ी को भी परिचित कराया जा रहा है।

मान्यता है कि नागपंचमी पर सर्पों के पूजन पर्व यहीं से शुरू हुआ

मंदिर के पुजारी ने बताया कि नागपंचमी पर्व की शुरुआत भगवान नागवासुकि जी की शर्तों के कारण ही हुई। नाग पंचमी के दिन मंदिर में प्रत्येक वर्ष मेला लगता है। मान्यता है इस दिन भगवान वासुकि का दर्शन कर चांदी के नाग–नागिन का जोड़ा अर्पित करने मात्र से कालसर्प दोष से मुक्ति मिलती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मास की पंचमी तिथि को नागवासुकि के विशेष पूजन का विधान है। इस मंदिर में कालसर्प दोष और रूद्राभिषेक करने से जातक के जीवन में आने वाली सभी तरह की बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

- इंडिगो के विमान की हुई लैंडिंग,
- वॉटर कैनन से किया गया स्वागत
- 25 नवंबर 2021 को प्रधानमंत्री ने रखी थी आधारशिला

सीएम योगी की पहल लाई रंग

नोएडा एयरपोर्ट पर पहली बार उतरा विमान

लखनऊ/नोएडा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल सोमवार को रंग ले आई, जब नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर) पर पहली बार विमान उतरा। कई दशकों से देखा गया यह सपना योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में 9 दिसंबर 2024 को आखिरकार पूरा हो गया। सोमवार को पहली बार उतरे विमान का वॉटर कैनन से स्वागत किया गया। एशिया के सबसे बड़े एयरपोर्ट जेवर पर इस सपने के पूरा होने से सर्वाधिक एयरपोर्ट वाले उत्तर प्रदेश के खाते में एक और उपलब्धि शामिल हो गई।

25 नवंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस एयरपोर्ट का आधारशिला रखी थी। इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कई बार यहां पहुंचकर समय–समय पर निरीक्षण किया और गुणवत्तापूर्ण कार्य के निर्देश दिए। इस एयरपोर्ट की वजह से गौतमबुद्धनगर, अलीगढ़, बुलंदशहर, गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा समेत आसपास के क्षेत्रों में विकास के नए अवसर खुलेंगे।

यूपी का पांचवां अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट

जेवर यूपी का पांचवां अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है। यूपी में इसके अलावा लखनऊ, वाराणसी, अयोध्या व कुशीनगर भी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश नागरिक उड्ड्यन के क्षेत्र में भी नित नई उपलब्धि हासिल कर रहा है।

'बंटेंगे तो कटेंगे' केवल एक नारा नहीं थाय यह भाजपा की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा था। इसका उद्देश्य था मतदाताओं को भावनात्मक और वैचारिक स्तर पर जोड़ना। इस नारे ने भाजपा के पक्ष में एक ऐसा वातावरण बनाया, जहां विकास, सुरक्षा और हिंदुत्व के मुद्दे एक साथ जुड़े हुए प्रतीत हुए।

बंटेंगे तो कटेंगे
योगी के नारे ने बदला चुनावी परिदृश्य

अभिषेक पांडेय, लखनऊ

भारत की राजनीति में चुनाव प्रचार एक कला है, जहां शब्दों का प्रभाव मतदाताओं के मन–मस्तिष्क पर गहरा असर डाल सकता है। हाल ही में महाराष्ट्र और झारखंड के चुनावों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने नारे ष्बंटेंगे तो कटेंगेष् से जबरदस्त चर्चा बटोरी। यह नारा न केवल चुनाव प्रचार का प्रमुख हिस्सा बना, बल्कि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति में एक नई बहस को जन्म देने वाला साबित हुआ। इस लेख में हम इस नारे की उत्पत्ति, उसकी रणनीति, और उसके व्यापक राजनीतिक प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

महाराष्ट्र और झारखंड जैसे राज्यों में, जहां क्षेत्रीय और जातीय मुद्दे राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करते हैं, इस नारे ने मतदाताओं को सीधे तौर पर अपील किया। यह नारा हिंदुत्व की विचारधारा और भाजपा के लिए केंद्रित चुनावी रणनीति का हिस्सा था, जिसका मकसद मतदाताओं को उनकी पहचान और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना था।

इस नारे की अपील का मुख्य कारण इसकी सरलता और प्रभावशीलता है। ष्बंटेंगे तो कटेंगेष ने न केवल विभाजनकारी राजनीति के खिलाफ भाजपा की स्थिति को मजबूत किया, बल्कि इससे एकजुटता का संदेश भी दिया गया। यह नारा भाजपा के समर्थकों को सक्रिय करने और विरोधियों की रणनीतियों को चुनौती देने में सफल रहा।

महाराष्ट्र में, जहां शिवसेना और एनसीपी–कांग्रेस गठबंधन ने स्थानीय मुद्दों पर जोर दिया, योगी का नारा विकास और सुरक्षा के मुद्दों को हिंदुत्व के संदर्भ में रखने में कारगर साबित हुआ। झारखंड में, जहां आदिवासी और गैर–आदिवासी आबादी के बीच विभाजन का इतिहास रहा है, इस नारे ने भाजपा के पक्ष में एकजुटता का माहौल बनाया।

हालांकि नारे के प्रभाव को सीधे तौर पर मापना मुश्किल है, लेकिन यह स्पष्ट था कि योगी आदित्यनाथ के इस नारे ने भाजपा के प्रचार अभियान को धार दी। महाराष्ट्र में भाजपा ने स्थानीय मुद्दों और हिंदुत्व को प्रभावी ढंग से जोड़ा, जबकि झारखंड में नारा भाजपा के परंपरागत वोट बैंक के अलावा नए मतदाताओं को भी आकर्षित करने में सफल रहा।

विपक्षी दलों ने इस नारे को विभाजनकारी और ध्रुवीकरण का प्रयास बताया। शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस ने इसे भाजपा की ध्रुवीकरण की राजनीति का

योगी आदित्यनाथ, जो अपने तीखे भाषणों और हिंदुत्व के प्रबल समर्थक के रूप में जाने जाते हैं, ने महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव प्रचार के दौरान इस नारे का उपयोग किया। 'बंटेंगे तो कटेंगे' एक ऐसा नारा है जो सीधा, प्रभावशाली और सरल है। इसका उद्देश्य था समाज के अंदर मौजूद विभाजनकारी ताकतों को उजागर करना और मतदाताओं को यह याद दिलाना कि सामूहिक एकता ही विकास और सुरक्षा का मार्ग है।

हिस्सा करार दिया। झारखंड में, झारखंड मुक्ति मोर्चा (श्रडड) और कांग्रेस ने इसे आदिवासी हितों के खिलाफ बताया। हालांकि, यह स्पष्ट था कि इस नारे ने भाजपा के समर्थकों को एकजुट किया और विपक्ष को बैकफुट पर डाल दिया।

जहां एक ओर इस नारे को हिंदुत्व के एजेंडे को बढ़ावा देने का साधन बताया गया, वहीं दूसरी ओर इसे भाजपा की एकजुटता की अपील के रूप में देखा गया। कुछ विश्लेषकों ने इसे भाजपा की श्माइक्रो–टार्गेटिंगश रणनीति का हिस्सा बताया, जो समाज के विभिन्न वर्गों को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास करती है।

इस नारे का असर केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि इसने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच बहस और चर्चा को जन्म दिया। महाराष्ट्र और झारखंड के मतदाता इसे अपनी स्थानीय जरूरतों और चिंताओं के संदर्भ में देखने लगे। इससे यह साबित हुआ कि सही समय और संदर्भ में दिया गया संदेश जनता के विचारों को प्रभावित कर सकता है।

'बंटेंगे तो कटेंगे' का नारा भारतीय राजनीति में एक नया आयाम जोड़ता है। यह दर्शाता है कि कैसे एक साधारण लेकिन शक्तिशाली नारा चुनावी सफलता का आधार बन सकता है। महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव परिणामों ने यह साबित किया कि योगी आदित्यनाथ का यह नारा भाजपा के लिए एक प्रभावी हथियार साबित हुआ। यह न केवल भाजपा की रणनीति को मजबूत करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि भारतीय राजनीति में नारेबाजी कैसे मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित कर सकती है।

A Visionary Leader Transforming **Business and Society**

Abhinav Agarwal

The Entrepreneur with a Heart of Gold

Mr. Abhinav Agarwal

Professional - Profile

Personal Details:
Age: 45
Education: B.E.
(Electronics & Instrumentation)

Family Background:

Member of a well-established business-cum-industrial family from Muzaffarnagar.

Business Roles:

1.Executive Director: Ramaa Shyama Papers Private Limited, Bareilly.
2. Director: Neostar Realty Private Ltd (Real Estate Business)

Professional Associations:

1. Active member of:
- PHD Chamber of Commerce
- CII (Chamber of Commerce & Industry)
- IIA (Indian Industries Association)

2.President: Central U.P. Chamber of Commerce & Industry Welfare Association.
3. Member: Advisory Committee of North Eastern Railway.
4. Charter President: Rotary Club of Bareilly Heights.

Former Positions Held:

Chief Warden, Civil Defense, Bareilly.-Vice President, Round Table India, Bareilly.-Vice President, Jaycees Club, Bareilly.

Other Affiliations:

Lifetime Member of IIPPTA (Indian Pulp & Paper Technical Association).

Abhinav Agarwal, a dynamic entrepreneur and philanthropist, has set an exemplary benchmark in the fields of industry and social welfare. With a degree in Electronics & Instrumentation and a rich heritage of business acumen, he has successfully combined innovation, sustainability, and compassion in his endeavors.

As the Executive Director of Ramaa Shyama Papers Private Limited and Director of Neostar Realty Private Ltd, Mr. Agarwal has spearheaded growth and sustainability in the business world. Beyond the boardroom, his deep commitment to societal betterment is reflected in his leadership roles with organizations like the Rotary Club of Bareilly Heights, Central UP Chamber of Commerce, and many others. A recipient of widespread admiration for his transformative contributions to both business and community welfare, Mr. Agarwal continues to inspire with his visionary approach and dedication. This exclusive interview dives into his remarkable journey and the impact he's creating in diverse spheres.

Can you tell us about your entrepreneurial journey and what inspired you to start your ventures?

My entrepreneurial journey began with a desire to contribute to my family's legacy of business excellence. I was inspired by the industrial and business roots of my family in Muzaffarnagar. Over the years, I ventured into diverse fields such as paper manufacturing with Ramaa Shyama Papers and real estate with Neostar Realty, aiming to create sustainable and innovative businesses.

What challenges did you face while establishing your businesses, and how did you overcome them?

Starting any business comes with challenges like market competition, regulatory hurdles, and financial planning. I overcame these challenges through resilience, a strong focus on innovation, and teamwork. My technical background in electronics and instrumentation also helped me implement efficient processes.

How does Ramaa Shyama Papers contribute to sustainable development?

Ramaa Shyama Papers is committed to sustainable practices. We focus on eco-friendly manufacturing processes, recycling, and reducing waste to ensure minimal environmental impact. Sustainability is at the core of our operation.

What motivates you to stay involved in multiple business domains?

I believe diversification is key to growth and stability. It allows me to explore new opportunities, mitigate risks, and contribute to various sectors of the economy. My motivation also comes from creating jobs and contributing to community welfare.

You are deeply involved in social work. What inspired your interest in this area?

My inspiration comes from a sense of responsibility toward society. My involvement with organizations like the Rotary Club, Roundtable India, Jaycees and Central U.P. Chamber of Commerce has given me platforms to make a positive impact and address pressing

social issues.

Could you share some notable initiatives you have undertaken through social organizations?

Through the Rotary Club of Bareilly Heights and Round Table India, I've been part of initiatives focused on healthcare, education, and community development. For example, we contributed to built classrooms & Infrastructure for underprevilaged students, Contributed in Covid relief fund, Organized health camps, Donated Health ATM machine to CHC, blood donations, and contributed to disaster relief efforts. We made an oxygen Concentrator bank during critical COVID-19 time to help society at large.

What is your vision for the Central U.P. Chamber of Commerce & Industry Welfare Association?

My vision is to strengthen the industrial and entrepreneurial ecosystem of Industries & Trade of Central U.P. by providing businesses opportunities along with the support and resources they need to thrive. This includes fostering innovation, catering knowhows of govt. policies, Imparting knowledge of technology advancement to members, advocating for policy reforms, and promoting skill development. Young enterprenuers must be promoted.

How do you balance your responsibilities as a business leader and social worker?

Time management and delegation are crucial. I've built a capable team to handle operational aspects, allowing me to focus on strategic decisions and community projects. Maintaining a balance is challenging but immensely rewarding.

As the Charter President of the Rotary Club of Bareilly Heights, what has been your proudest achievement?

One of my proudest achievements was when we made a Oxygen Concentrator bank during critical time of Covid- 19. When system was helpless, we helped the needy ones. We made a bank of 25 concentrators and served many people who were not getting any beds in hospitals coz of too many cases in the city. Our small effort helped many and I feel proud that i could be a part of it. A project to provide clean drinking water to underprivileged communities, Free food & Medicine distribution project and Blood Donation have been permanent projects of our Rotary. It was fulfilling to see how a simple initiative brought significant change to people's lives.

How do you see the role of businesses in community welfare?

Businesses have a crucial role in community welfare. Beyond creating jobs, they can drive positive change by investing in education, healthcare, and sustainability. Corporate social responsibility (CSR) is not just an obligation but an opportunity to contribute meaningfully.

As a member of PHD Chamber of Commerce and CII, what initiatives have you been part of ?

I've been involved in policy advocacy, promoting entrepreneurship, and facilitating industry-academia partnerships. These initiatives aim to create a conducive environment for business growth and innovation.

What are your thoughts on the importance of networking for entrepreneurs? Networking is vital. It opens doors to collaborations, new ideas,

and resources. Visit exibitions, attending seminars and confrences helps a lot. Being part of organizations like CII, CUPCCI and PHD Chamber of Commerce has expanded my network and enriched my entrepreneurial journey.

How has your engineering background influenced your approach to business?

My engineering background has taught me problem-solving, analytical thinking, and the importance of precision. These skills are invaluable in designing efficient systems and making data-driven decisions.

What advice would you give to aspiring entrepreneurs?

Stay committed to your vision, embrace challenges, and never stop learning. Build strong relationships and prioritize ethical practices. Most importantly, give back to society as you grow.

Can you share an example of your work with the Indian Pulp & Paper Technical Association (IIPPTA)?

As a lifetime member of IIPPTA, I've contributed to discussions on adopting green technologies in the paper industry. We've worked to promote innovation and sustain ability across the sector. In IPPTA we keep on attending conferences across India, inviting technical people for their talks and we do visit Industries across the world to adopt the latest technologies.

How do you view the role of young entrepreneurs in shaping India's future?

Young entrepreneurs bring fresh ideas, energy, and adaptability. They are the driving force behind innovation and job creation. I encourage them to think big and aim for global impact. We created NEXT-GEN team in Chamber of Commerce of young Enterpreneurs with aim to give them platform for enterprenuership development and use their energy and innovations in Chamber's event and activities.

What social issue is closest to your heart, and why?

Education is closest to my heart. It's the foundation of a strong society and economy. I've supported initiatives that provide scholarships and resources to underprivileged students.

How has your role as Chief Warden of Civil Defence shaped your approach to crisis management?

It has taught me the importance of preparedness, teamwork, and quick decision-making. We made a QRT(Quick Response Team) of wardens and conducted many trainings on disaster management, Fire safety, CPR (cardiopulmonary resuscitation) in various schools, colleges, Institutes & Industries. These lessons have been invaluable in both business and social initiatives.

What legacy do you hope to leave behind?

I hope to leave behind a legacy of responsible entrepreneurship and impactful social work. My goal is to inspire others to pursue success while uplifting their communities.What are your future goals, both in business and social work?In business, I aim to expand into new markets and adopt cutting-edge technologies. In social work, I want to focus on large-scale initiatives in healthcare and education that can make a transformative impact on society.

Interview by Reporter **Abhishek Pandey,** Lucknow

Global saints applaud the grand, clean and modern Mahakumbh in Prayagraj

- Saints from Japan, Spain, and Nepal are enchanted by the grand celebration of Sanatan culture at the Mahakumbh
- Guests are delighted by Yogi govt's 'Atithi Devo Bhava' tradition and the well-organized event
- Saints from abroad to perform sacred rituals at Mahakumbh alongside their Gurus

Ahead of the grand Mahakumbh in Prayagraj, the influx of saints from across India, along with foreign saints, is gaining momentum. As the holy flags of Akharas rise, the entry procession into the Kumbh city and the Kumbh cantonment are continuing their traditional routes. The foreign saints arriving for the Mahakumbh are increasingly impressed with the new arrangements and organization of the event.
These foreign saints are finding the grand and meticulously organized arrangements of the Mahakumbh highly favorable as they arrive in the sacred city for this monumental spiritual event.

As the date for the Prayagraj Mahakumbh draws closer, the presence of saints in the Akhara sector of the Kumbh area is steadily increasing. Saints from across India and abroad are beginning to arrive. Foreign saints participating in the Shri Panch Dashnam Juna Akhara's camp entry procession are finding the Mahakumbh arrangements impressive.

Yoga Mata Keiko, a Japanese disciple of Juna Akhara's Mahamandaleshwar Som Giri (Pilot Baba), joined the procession along with several other Japanese female saints. She mentioned that the camp entry procession gave her an idea of the upcoming Mahakumbh and praised the good arrangements, including air connectivity and transportation.

Hema Nand Giri, a female saint from Nepal and the Mahamandaleshwar of Juna Akhara, remarked, "It is the good fortune of the saints that the Chief Minister of the state where the Mahakumbh is being organized is also a saint. The way Yogi ji is making preparations with the resolve to organize a grand and divine Mahakumbh, the propagation of Sanatan Dharma is now spreading rapidly in various countries around the world, including Nepal."

The Yogi government in Uttar Pradesh is focusing on making the Prayagraj Mahakumbh both grand and spiritually elevating, with an emphasis on cleanliness and digitalization. Foreign saints are also pleased with these efforts.

Swami Hemananda Giri
Juna Akhara,
— Nepal —

Swami Anjana Giri
Juna Akhara,
— Spain —

Keiko Aikawa
Yoga Mata

Anjana Giri, a saint from Juna Akhara who hails from Spain and was previously known as Angela, shared that she has been attending the Mahakumbh for the past 30 years with her guru. However, this time, the experience is different. "There is a strong focus on sanitation, ensuring cleanliness everywhere. Information is also available on digital platforms, making it easier for pilgrims and tourists coming from abroad," she said.

Bruno Giri from France, who has previously participated in two Mahakumbhs, also expressed his admiration. "This time, the city feels different, it has a festive atmosphere," he said, highlighting the changes and improvements in the overall experience.

देश में
नंबर वन
उत्तर प्रदेश

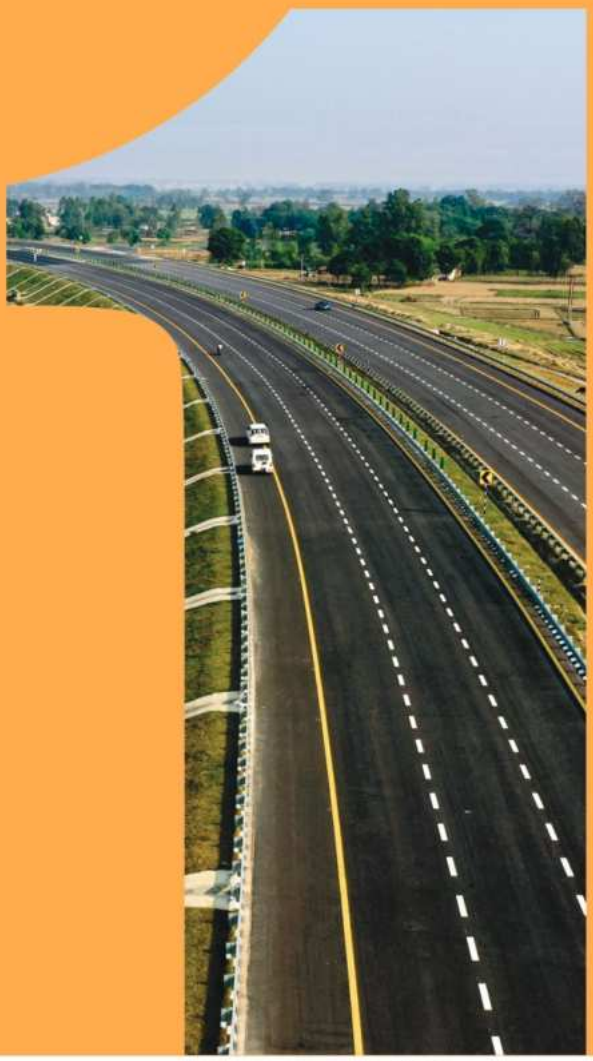

एक्सप्रेसवे प्रदेश
उत्तर प्रदेश

सर्वाधिक एक्सप्रेसवे वाला राज्य
6 क्रियाशील, 7 निर्माणाधीन

- पूर्वांचल एक्सप्रेसवे : लखनऊ से गाजीपुर (341 किमी.)
- बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे : चित्रकूट से इटावा (296 किमी.)
- आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे : आगरा से लखनऊ (302 किमी.)
- यमुना एक्सप्रेसवे : ग्रेटर नोएडा से आगरा (165 किमी.)
- दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे : मेरठ से दिल्ली (82 किमी.)
- नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे (25 किमी.)

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश